कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत कृषि अखबार

Postal R.No.MP/BPL/525/2025-27 RNI No. Raj HIN/2000/3239, डाक प्रेषण का दिन- मंगलवार, बुधवार

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर

ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 जयपुर, प्रकाशन सोमवार, 1 दिसम्बर 2025 वर्ष-26 अंक-10 मूल्य-12/- कुल पृष्ठ-12 www.krishakjagat.org पृष्ठ-1

देश ने 357 मिलियन टन खाद्यान्न उत्पादन का बनाया ऐतिहासिक रिकॉर्ड

वोकल फॉर लोकल की भावना बनी देश के करोड़ों लोगों के जीवन का हिस्सा : प्रधानमंत्री

'मन की बात' प्रधानमंत्री के देशवासियों से आत्मीय जुड़ाव का प्रतीक : मुख्यमंत्री

जयपुर। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गतदिनों 'मन की बात' कार्यक्रम की 128वीं कड़ी में देशवासियों को संबोधित किया। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने सांगानेर कैंप कार्यालय में आमजन के साथ 'मन की बात' कार्यक्रम को सुना।

प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि कृषि क्षेत्र में भारत ने बड़ी उपलब्धि हासिल करते हुए 357 मिलियन टन के खाद्यान्न उत्पादन का ऐतिहासिक रिकॉर्ड बनाया है। उन्होंने कहा कि 10 साल पहले की तुलना में भारत का खाद्यान्न उत्पादन 100 मिलियन टन और बढ़ गया है।

श्री मोदी ने कहा कि देश में डेढ़ लाख मीट्रिक टन से भी ज्यादा शहद का उत्पादन हो रहा है और शहद का निर्यात भी तीन गुना से ज्यादा बढ़ गया है। उन्होंने देश के विभिन्न इलाकों में स्थानीय लोगों एवं संस्थाओं द्वारा शहद उत्पादन की भी चर्चा की। उन्होंने कोयम्बटूर में आयोजित विशाल नैचुरल फार्मिंग सम्मेलन को भारत की प्राचीन परंपराओं का हिस्सा बताते हुए इसे निरंतर बढ़ावा देने की अपील की।

प्रधानमंत्री ने जी-20 शिखर सम्मेलन के बारे में भी बात की। उन्होंने कहा कि देशवासियों की ओर से उन्होंने विश्व के नेताओं को जो उपहार भेंट किए, उसमें वोकल फॉर लोकल की भावना का विशेष ध्यान रखा। श्री मोदी ने बताया कि उन्होंने कनाडा के प्रधानमंत्री को चांदी के अश्व की प्रतिकृति भेंट की जो राजस्थान के उदयपुर की बेहतरीन शिल्पकला को दर्शाती है। उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता जताई कि वोकल फॉर लोकल की भावना को देश के करोड़ों लोगों ने अपने जीवन का हिस्सा बना लिया है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि दुनिया के कई देशों में विन्टर टूरिज्म अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा है। भारत में भी उत्तराखण्ड जैसे राज्यों में इसकी अपार संभावनाएं है। उन्होंने कहा कि हिमालय की वादियां एडवेन्चर्स गेम्स और डेस्टिनेशन वेडिंग के लिए प्रसिद्ध हो रही हैं।

मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि मन की बात कार्यक्रम प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के देशवासियों से आत्मीय जुड़ाव का प्रतीक है। इस कार्यक्रम के माध्यम से प्रधानमंत्री देश की गौरवशाली उपलब्धियों के बारे में हमें बताते हैं। वे हमेशा स्वदेशी उत्पादों को प्रोत्साहित करने के साथ ही देशवासियों में एक भारत श्रेष्ठ भारत की भावना को प्रबल करते हैं।

प्रदेश के 38 जिलों में 310 नए पशु चिकित्सालय भवनों का होगा निर्माण : श्री कुमावत

जयपुर। राजस्थान को विकास के नए आयाम देने के लिए मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा की सार्थक पहल एवं पशुपालन, गोपालन, डेयरी एवं देवस्थान मंत्री श्री जोराराम कुमावत के निर्देशन में प्रदेश की पशु चिकित्सालयों में आधारभूत संरचनाओं के साथ राज्य की पशु चिकित्सा व्यवस्था के समग्र रूप से सुदृढ़ीकरण के लिए निरंतर रूप से प्रभावी कदम उठाए जा रहे हैं। इसी कड़ी में राजस्थान सरकार ने राज्य के 310 पशु चिकित्सालयों के नए भवनों के निर्माण के लिए 144 करोड़ 15 लाख रुपये की राशि स्वीकृत की है। इन निर्माण कार्यों को प्रारम्भ करने के आदेश जारी करते हुए प्रति पशु चिकित्सालय 46.50 लाख रुपये की राशि स्वीकृत की गई है। इसके तहत अजमेर, अलवर, बालोतरा, बांसवाड़ा, बारां, बाड़मेर, ब्यावर, भरतपुर, भीलवाड़ा, बीकानेर, बूंदी, चितौड़गढ़, चूरू, दौसा, डीग-भरतपुर, डूंगरपुर, जयपुर, जैसलमेर, जालौर, झालावाड़, झुंझुंनू, जोधपुर, करौली, खैरथल-तिजारा, कोटा, कोटपूतली-बहरोड़, कुचामन सिटी, नागौर, पाली, फलौदी, प्रतापगढ़, राजसमंद, सलूंबर, सवाईमाधोपुर, सीकर, सिरोही, श्रीगंगानगर, टोंक व उदयपुर जिले में नए पशु चिकित्सा भवन निर्माण के लिए

कुल 14415 लाख रुपए की स्वीकृति जारी की गई है

पशुपालन मंत्री श्री जोराराम कुमावत ने बताया कि ग्रामीण विकास निधि के तहत 31 मार्च-2029 तक इन भवनों के निर्माण कार्य को पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। उन्होंने बताया कि जयपुर के 26, भीलवाड़ा, पाली और नागौर के 18-18, झुंझुनू के 17, जोधपुर के 16, चित्तौड़ के 14, कोटपूतली- बहरोड़, बीकानेर, सीकर के 11-11 अलवर, बांसवाड़ा, चुरु के 10-10, टोंक, उदयपुर के 09-09, अजमेर, दौसा, जालौर, बालोतरा के 07-07, बाड़मेर, डीग, कोटा, खैरथल- तिजारा, कुचामन के 06-06, डूंगरपुर के 05, प्रतापगढ़, सवाईमाधोपुर के 04-04, बारां, भरतपुर, बूंदी, जैसलमेर, झालावाड़, फलौदी, सिरोही के 03-03 और ब्यावर, करौली, राजसमंद सलूम्बर तथा श्रीगंगानगर के 02-02 स्थानों पर पशु चिकित्सालय भवन निर्मित करने के लिए प्रत्येक जिले को प्रति चिकित्सालय 46.50 लाख रुपये की राशि मंजूर की गई है।

कृषि और बागवानी—दोनों में रिकॉर्ड बढ़ोतरी

खरीफ उत्पादन 38.70 लाख टन बढ़ा, बागवानी उत्पादन 3690 लाख टन के पार

नईदिल्ली (कृषक जगत)। केंद्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने गत सप्ताह खरीफ 2025-26 की प्रथम अग्रिम अनुमान रिपोर्ट और बागवानी 2024-25 की तृतीय अग्रिम अनुमान रिपोर्ट जारी करते हुए बताया कि कृषि-बागवानी दोनों क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति दर्ज हुई है।

खरीफ 2025-26: कुल खाद्यान्न 1733.30 लाख टन का अनुमान

चावल: 1245.04 लाख टन (17.32 लाख टन अधिक), **मक्का :** 283.03 लाख टन (34.95 लाख टन अधिक), **मोटा अनाज:** 414.14 लाख टन, **दलहन :** 74.13 लाख टन (तूर 35.97 लाख टन, उड़द 12.05, मूंग 17.20), **तिलहन :** 275.63 लाख टन (मूंगफली 110.93, सोयाबीन 142.66), **गन्ना:** 4756.14 लाख टन, **कपास:** 292.15 लाख गांठें। श्री चौहान ने कहा कि अनुकूल मानसून और तकनीकी प्रगति से प्रमुख खरीफ फसलों में व्यापक बढ़ोतरी का अनुमान है।

बागवानी 2024-25: उत्पादन बढ़कर 3690.55 लाख टन

कुल बागवानी क्षेत्रफल : 294.88 लाख हेक्टेयर (+4 लाख हेक्टेयर), **कुल उत्पादन :** 3690.55 लाख टन (+143.11 लाख टन)

फल और सब्जियों में जोरदार वृद्धि

फल: 1187.60 लाख टन (+5.12%)
सब्जियाँ: 2156.84 लाख टन (+4.09%)
प्याज : 307.89 लाख टन (+26.88%)
टमाटर: 194.68 लाख टन
आलू: 581.08 लाख टन

अन्य बागवानी फसलें

सुगंधित व औषधीय पौधे: 7.81 लाख टन
मसाले: 125.03 लाख टन (लहसुन, अदरक, हल्दी में वृद्धि).

संसद का शीतकालीन सत्र 1 दिसम्बर से

नई दिल्ली। संसदीय कार्य मंत्री श्री किरेन रिजिजू ने बताया कि संसद का शीतकालीन सत्र 1 से 19 दिसंबर तक चलेगा। श्री रिजिजू ने बताया कि राष्ट्रपति ने सरकार के शीतकालीन सत्र के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। संसद का ये सत्र अन्य सत्रों के मुकाबले छोटा होगा।

देश में गेहूं बुवाई ने पकड़ी रफ्तार

अब तक 306 लाख हेक्टेयर में हुई रबी बोनी

नई दिल्ली (कृषक जगत)। देश में रबी फसलों की बुवाई इस वर्ष तेज रफ्तार से आगे बढ़ रही है। कृषि मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, 21 नवंबर 2025 तक कुल 306.31 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में बुवाई पूरी की जा चुकी है। यह आंकड़ा पिछले वर्ष की इसी अवधि के 272.78 लाख हेक्टेयर की तुलना में 33.53 लाख हे. अधिक है। वहीं गेहूं की बोनी 128 लाख हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में कर ली गई है जबकि गत वर्ष समान अवधि में 107 लाख हेक्टेयर हुई थी।

इस वर्ष देश की प्रमुख रबी फसल गेहूं का क्षेत्र बढ़कर 128.37 लाख हेक्टेयर हो गया है, जो पिछले वर्ष से 21.27 लाख हेक्टेयर अधिक है। गत समान अवधि में 107.09 लाख हेक्टेयर में गेहूं बोया गया था। उधर धान की बुवाई भी 8.26 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गई, जो गत वर्ष समान अवधि में 7.59 लाख हेक्टेयर में बोई गई थी।

दलहन

दालों की बुवाई ने इस सीजन में विशेष बढ़त दर्ज की है। दालों के कुल रकबे में 5.21 लाख हेक्टेयर की वृद्धि हुई और यह बढ़कर 73.36 लाख हेक्टेयर पर पहुंच गया है। चना 53.71 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया, जिसमें 4.41 लाख हेक्टेयर की बढ़त दर्ज हुई।

मोटा अनाज

सरकार द्वारा प्रोत्साहित की जा रही 'श्री अन्न' (मिलेट्स) श्रेणी में भी ठोस वृद्धि देखी गई। इन फसलों के तहत क्षेत्र बढ़कर 19.69 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 17.26 लाख हेक्टेयर था।

तिलहन

तिलहन फसलों की बुवाई में इस वर्ष अच्छा सुधार देखने को मिला है और कुल क्षेत्रफल में 3.94 लाख हेक्टेयर की वृद्धि दर्ज की गई है। तिलहनों में सबसे अधिक बढ़ोतरी रेपसीड और सरसों में हुई, जिनका क्षेत्र बढ़कर 73.80 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया है-यह पिछले वर्ष समान अवधि में 72.69 लाख हेक्टेयर था।

प्रमुख रबी फसलों की बुवाई
21 नवम्बर 2025 की स्थिति (लाख हे. में)

फसल	सामान्य क्षेत्र	बुवाई 2025-26	बुवाई 2024-25
गेहूँ	**312.35**	**128.37**	**107.09**
चावल	**42.93**	**8.26**	**7.59**
दालें	**140.42**	**73.36**	**68.15**
चना	100.99	53.71	49.30
मसूर	15.13	9.01	8.57
मोटे अनाज	**55.33**	**19.69**	**17.26**
ज्वार	24.62	8.99	8.43
मक्का	23.61	6.57	5.38
तिलहन	**86.78**	**76.64**	**72.69**
सरसों	79.17	73.80	69.58
मूंगफली	3.69	1.12	1.27
अलसी	1.93	0.98	1.39
कुल	**637.81**	**306.31**	**272.78**

नोट : कुल क्षेत्रफल के आंकड़े चार्ट से अलग हैं, क्योंकि सभी फसलों को चार्ट में शामिल नहीं किया गया है।
स्त्रोत : कृषि मंत्रालय

हरित ईंधन और महिला-अनुकूल मशीनें-भारत की नई खेती का भविष्य

EIMA Agrimach India 2025

नई दिल्ली (कृषक जगत)। भारत की कृषि को 2047 के विजन के अनुरूप आधुनिक, टिकाऊ और श्रम-सहज बनाने के लिए हरित ऊर्जा आधारित मशीनरी और महिला किसानों के लिए जेंडर-फ्रेंडली उपकरण अनिवार्य हैं। यह संदेश केंद्रीय कृषि सचिव डॉ. देवेश चतुर्वेदी ने EIMA Agrimach India 2025 के उद्घाटन सत्र में दिया। राष्ट्रीय कृषि अखबार कृषक जगत एवं ग्लोबल एग्रीकल्चर मैगज़ीन इस कार्यक्रम के मीडिया पार्टनर थे।

इलेक्ट्रिक और CBG ट्रैक्टर—भारत की भविष्य की खेती

डॉ. चतुर्वेदी ने कहा कि अगले 5-10 वर्षों में कृषि मशीनरी को इलेक्ट्रिक एवं कम्प्रेस्ड बायोगैस (CBG) जैसे हरित ईंधनों की ओर तेजी से स्थानांतरित करना होगा।उन्होंने बताया कि इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर और CBG आधारित मशीनरी किसानों की रखरखाव व परिचालन लागत में उल्लेखनीय कमी लाएगी।

मंत्रालय भी भविष्य की नीतियों में ऐसी तकनीकों को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

महिला किसानों के लिए 'श्रम-कम' करने वाली मशीनें जरूरी

महिला किसानों को कृषि की 'रीढ़' बताते हुए उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र द्वारा 2026 को अंतरराष्ट्रीय महिला किसान वर्ष घोषित किए जाने के बाद उद्योग की जिम्मेदारी और बढ़ गई है। उन्होंने स्पष्ट किया कि जेंडर बजटिंग का अर्थ केवल स्वामित्व नहीं, बल्कि ऐसे उपकरण उपलब्ध कराना है जो उनका शारीरिक बोझ कम कर सकें—चाहे वे मैनुअल हों या मोटरचालित।

भारत-इटली कृषि सहयोग का नया दौर

भारत में इटली के राजदूत एंटोनियो बार्टोली ने बताया कि कृषि सहयोग बढ़ाने के लिए जल्द ही नई दिल्ली स्थित दूतावास में अग्रि-अताशे नियुक्त करने की दिशा में काम चल रहा है।

उन्होंने कहा कि करीब 20 इतालवी कंपनियां भारत में उत्पादन कर रही हैं तथा इस संख्या को बढ़ाने की योजना है। दोनों देशों ने द्विपक्षीय व्यापार को 20 अरब यूरो तक ले जाने का लक्ष्य रखा है।

कृषि को 'सेवा' के रूप में विकसित करने की जरूरत

आयोजन समिति के चेयरमैन एवं TAFE के बोर्ड निदेशक टी.आर. केसवन ने कहा कि सीडर जैसे महंगे उपकरणों का उपयोग किसानों द्वारा केवल कुछ दिनों के लिए किया जाता है, इसलिए कृषि को सेवा-आधारित मॉडल पर ले जाना होगा। ऐसे मॉडल में किसान उपकरणों को किराये पर लेकर उत्पादन लागत घटा सकेंगे।

भारत में मशीनीकरण बाजार दोगुना होने की ओर

फेडेरुनाकोमा की महानिदेशक सिमोना रापास्तेला ने बताया कि भारत का कृषि मशीनीकरण बाजार 2023 में 13.7 बिलियन डॉलर था, जो 2033 तक 31.6 बिलियन डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। भारतीय-इतालवी साझेदारी इस वृद्धि में अहम भूमिका निभाएगी।

पे-पर-यूज मॉडल से मशीनीकरण में आएगी रफ्तार

कार्यक्रम में FICCI–PwC की संयुक्त रिपोर्ट 'Farm Mechanisation: The Path Towards a Future-Ready India' जारी की गई। PwC के पार्टनर शशि कांत सिंह ने कहा कि व्यक्तिगत स्वामित्व के बजाय पे-पर-यूज मॉडल अपनाने से देशभर में मशीनीकरण और तेजी से बढ़ सकेगा।

इटैलियन ट्रेड एजेंसी की उप-आयुक्त सबरीना मंगियालावोरी ने बताया कि भारतीय किसान जुताई, बुवाई, सिंचाई, फसल संरक्षण और थ्रेसिंग जैसे आधुनिक समाधानों को तेजी से अपना रहे हैं। Corteva Agriscience के दक्षिण एशिया अध्यक्ष सुब्रत गीड ने कहा कि 2050 तक वैश्विक जनसंख्या 1000 करोड़ तक पहुंच सकती है, जिसमें भारत की सबसे बड़ी हिस्सेदारी होगी। ऐसे में मशीनीकरण ही उत्पादन बढ़ाने का सबसे प्रभावी रास्ता है।

खेती की अधिक जानकारी के लिए देखें
www.krishakjagat.org

किसानों को उर्वरकों की आपूर्ति हेतु सरकार के सशक्त प्रयास : कृषि मंत्री

किसानों को उर्वरकों की पर्याप्त उपलब्धता करने के लिए पूर्णत: प्रतिबद्ध

जयपुर। राज्य के कृषकों को समयबद्ध एवं पर्याप्त मात्रा में उर्वरकों की इलेक्ट्रॉन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से कृषि एवं उद्यानिकी मंत्री डॉ. किरोड़ी लाल ने पंत कृषि भवन में मीडिया से रूबरू होकर राज्य सरकार की प्रतिबद्धता दोहराई। उन्होंने बताया कि प्रदेश में उर्वरकों की आपूर्ति नियमित रूप से जारी है। राज्य सरकार किसानों को उर्वरकों की निर्बाध रूप से पर्याप्त एवं समय पर उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए पूर्णत: प्रतिबद्ध हैं तथा जिन जिलों में यूरिया व डीएपी की कमी की स्थिति बनी है वहां तत्काल प्रभाव से पूर्ति करवायी जा रही है।

डॉ. किरोड़ी लाल ने बताया कि प्रदेश में समय पर हुई पर्याप्त वर्षा तथा अक्टूबर माह में दो बार असामयिक वर्षा से भूमि में नमी की उपलब्धता बढ़ी, जिससे कृषकों द्वारा अग्रिम बुवाई में तेजी आई। इस वर्ष 26 नवम्बर तक गत वर्ष की तुलना में 9 लाख हैक्टेयर अधिक क्षेत्र में बुवाई की जा चुकी है। वहीं तिलहनी फसलों में 34 लाख हेक्टेयर एवं खाद्यान्न फसलों में 29 लाख हैक्टेयर क्षेत्रफल में प्रथम सिंचाई के साथ यूरिया की टॉप ड्रेसिंग भी की जा रही है, जिसके परिणामस्वरूप यूरिया की मांग में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है।

उन्होंने कहा कि किसानों द्वारा आवश्यकता से अधिक उर्वरक खरीदने की प्रवृत्ति भी मांग में वृद्धि का एक प्रमुख कारण है। बावजूद इसके राज्य सरकार ने उर्वरकों की उपलब्धता सुनिश्चित करने में कोई कमी नहीं रखी। पिछले 2 वर्षों में डीएपी की औसत आपूर्ति 2.53 लाख मैट्रिक टन करायी जा चुकी है, जो पूर्व सरकार के 5 वर्षीय औसत से अधिक है।

कृषि मंत्री ने बताया कि रबी सीजन के पहले दो महीनों अक्टूबर व नवम्बर में 7.53 लाख मैट्रिक टन की मांग के विरुद्ध 9.15 लाख मैट्रिक टन यूरिया उपलब्ध करवा दिया गया है। इसके अतिरिक्त 24 हजार मैट्रिक टन की आपूर्ति जारी है तथा आगामी दो दिनों में 31 हजार मैट्रिक टन यूरिया और उपलब्ध होने से माह के अंत तक कुल उपलब्धता 9.70 लाख मैट्रिक टन से अधिक हो जाएगी, जो मांग से 29 प्रतिशत अधिक है।

प्रदेश में अब तक लगभग 95 लाख हेक्टेयर में रबी फसलों की बुवाई हो चुकी है, जिसके अनुरूप लगभग 7 लाख मैट्रिक टन यूरिया की आवश्यकता है, जबकि 9.15 लाख मैट्रिक टन पहले ही किसानों को उपलब्ध करवा दिया गया है और निरंतर आपूर्ति जारी है।

डॉ. किरोड़ी लाल ने बताया कि विभाग द्वारा उर्वरकों का समान वितरण सुनिश्चित करने हेतु प्रत्येक विक्रय केंद्र पर विभागीय अधिकारियों की ड्यूटी लगाई गई है। किसानों को टोकन सिस्टम के माध्यम से उर्वरक वितरण करवाया जा रहा है। कई जिलों जैसे बांरा, झालावाड़, बूंदी, सवाईमाधोपुर, अलवर, भीलवाड़ा आदि में मांग से अधिक यूरिया की उपलब्धता करवाई गई है। प्रतापगढ़ जिले के धरियावद क्षेत्र में भी 2000 मैट्रिक टन यूरिया की शीघ्र आपूर्ति सुनिश्चित की जा रही है।

सहकारिता मंत्री ने किया 'सहकार गैलेरी' का उद्घाटन

'सहकार से समृद्धि' की संकल्पना को साकार करने प्रतिबद्ध सरकार : श्री दक

जयपुर,। सहकारिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री गौतम कुमार दक ने गुरुवार को राजस्थान सहकारी शिक्षा एवं प्रबंधन संस्थान (राइसेम) परिसर में अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष-2025 के अंतर्गत स्थापित की गई 'सहकार गैलेरी' का फीता काटकर उद्घाटन किया। उन्होंने गैलेरी का अवलोकन कर प्रदर्शित की गई जानकारी की सराहना की।

सहकारिता विभाग द्वारा एनसीसीएफ के सहयोग से स्थापित की गई सहकार गैलेरी में सहकारी आन्दोलन की यात्रा को आकर्षक रूप में प्रदर्शित किया गया है। श्री दक ने इस अवसर पर कहा कि सहकारिता की गौरवशाली यात्रा को दर्शाती यह गैलेरी आगन्तुकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी। यहां प्रदर्शित सामग्री न केवल सहकारिता के इतिहास, उपलब्धियों और नवाचारों को दर्शाती है बल्कि यह भी बताती है कि कैसे छोटे-छोटे सामूहिक प्रयासों से बड़े सामाजिक परिवर्तन संभव हैं।

सहकारिता मंत्री ने कहा कि सहकारिता केवल एक आर्थिक मॉडल नहीं होकर सामाजिक न्याय, सहभागिता और पारदर्शिता के मूल्यों पर आधारित आन्दोलन है, जो राष्ट्र की नींव को मजबूत करता है।

सहकार गैलेरी में राज्य की सहकारी समितियों के पुराने छायाचित्रों एवं प्रमाण पत्रों को भी प्रदर्शित किया गया है, जो आकर्षण का केन्द्र है। साथ ही, अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष-2025 के अंतर्गत आयोजित की गई प्रमुख गतिविधियों के छायाचित्रों को भी आकर्षक रूप में प्रदर्शित किया गया है।

डॉ. मीना ने संभाला पशुपालन निदेशक का कार्यभार

जयपुर। डॉ. सुरेशचंद मीना ने पशुपालन विभाग के निदेशक तथा आरएलडीबी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी का कार्य भार संभाल लिया। इस अवसर पर शासन सचिव डॉ. समित शर्मा ने डॉ. मीना को बधाई दी।

कार्यभार ग्रहण करने के बाद डॉ. मीना ने कहा कि राज्य सरकार पशुपालकों के विकास के लिए कृतसंकल्पित होकर काम कर रही है। विकसित और समृद्ध राजस्थान बनाने तथा विभाग को एक नई ऊंचाई तक ले जाने के लिए पशुपालन विभाग अपना भरपूर प्रयास करेगा। उन्होंने विभाग के सभी कार्मिकों से नई ऊर्जा के साथ काम करने का आग्रह किया। विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों ने डॉ. मीना को निदेशक पद का कार्य भार ग्रहण करने पर बधाई और शुभकामनाएं दीं।

डॉ. मीना ने 1994 में आरपीएससी से चयनित होकर पशुपालन विभाग में अपनी सेवा की शुरुआत की। इनकी पहली नियुक्ति दौसा जिले के मानपुर पशु चिकित्सालय में पशु चिकित्सा अधिकारी के रूप में हुई। उसके बाद करौली और भरतपुर जिले में भी श्री मीना ने विभिन्न पदों पर अपनी सेवाएं प्रदान कीं।

वर्ष 2021 में श्री मीना बीपीलैब जयपुर में संयुक्त निदेशक के पद पर और 2021 में इन्होंने राजस्थान पशुधन विकास बोर्ड के मैनेजर का पदभार संभाला। वर्ष 2022 से पशुपालन निदेशालय में कार्यरत डॉ. मीना ने अतिरिक्त निदेशक दवा, प्रजनन तथा पशुधन बीमा का दायित्व कुशलता से संभाला। इसके साथ ही प्रशासन एवं प्रशिक्षण का अतिरिक्त भार भी उनके पास था। डॉ. मीना दवा एवं बीमा मामलों के विशेषज्ञ माने जाते हैं।

कृषि विभाग की कार्यवाही में संदिग्ध यूरिया के 420 बैग जब्त

जयपुर। कृषि आयुक्तालय जयपुर एवं चितौड़गढ़ जिला कलेक्टर श्री आलोक रंजन के निर्देशन में आदान विक्रेताओं के यहां औचक निरीक्षण किया गया। जिसमें चितौड़गढ़ के मांगरोल स्थित हरि मांगरोल फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी लि. के गोदाम में 160 बेग संदिग्ध यूरिया, इफको यूरिया के 50 बैग, उत्तम यूरिया के 60 बेग तथा किसान यूरिया के 150 बेग भरे हुए साथ ही उक्त कंपनियां के लगभग 550 बेग खाली पाये गये।

प्रथम दृष्टया में विभिन्न कंपनियों के बैगों को तकनीकी यूरिया में परिवर्तित करना पाया गया, जो उर्वरक नियंत्रण आदेश 1985 एवं आवश्यक वस्तु अधिनियम की विभिन्न धाराओं का स्पष्ट उल्लंघन है। उर्वरक नियंत्रण आदेश के तहत नमूना आहरण कर जब्ती की करवाई की गई । करवाई के दौरान फर्म के प्रतिनिधि तख्त सिंह मौजूद थे। इन्होंने बताया कि यह उर्वरक श्री अनिल अंजना निवासी रानीखेडा का है। संबंधित फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी के विरुद्ध प्रथम सूचना रिपोर्ट की कार्रवाई की जा रही है।

इस दौरान श्री दिनेश कुमार जागा सयुंक्त निदेशक कृषि, डॉ. शंकर लाल जाट उपनिदेशक उद्यान, अंशु चौधरी सहायक निदेशक कृषि, ज्योति प्रकाश सिरोया, गोपाल लाल शर्मा कृषि अधिकारी, रामजस खटिक, गोपाल लाल धाकड़ कृषि अधिकारी, संजय बाहेंती सहायक कृषि अधिकारी, रमेश जाट, कमलेश यादव, मुकेश मीना एवं हनुमान नागर कृषि पर्यवेक्षक उपस्थित रहें।

समर्थन मूल्य पर मूंग, मूंगफली, उड़द एवं सोयाबीन की खरीद प्रारम्भ

जयपुर। खरीफ वर्ष 2025-26 के मूंग, मूंगफली, उड़द एवं सोयाबीन की खरीद गत 24 नवंबर से सुचारू रूप से जारी है। इसके लिए पंजीकरण प्रक्रिया ई-मित्र के माध्यम से 18 अक्टूबर से प्रारम्भ हुई है। क्षेत्रीय अधिकारी श्रीमती सुलक्षणा ढेबाना ने बताया कि केन्द्र सरकार द्वारा एफएक्यू मानकों के अनुरूप मूंग का समर्थन मूल्य 8768 रुपये प्रति क्विंटल, उड़द 7800 रुपये प्रति क्विंटल, मूंगफली 7263 रुपये प्रति क्विंटल तथा सोयाबीन (पीली) का 5328 रुपये प्रति क्विंटल निर्धारित किया गया है। खरीद से संबंधित किसी भी समस्या के निवारण हेतु टोल-फ्री नंबर 1800-180-6001 उपलब्ध है।

उन्होंने पंजीकृत किसानों से आग्रह किया कि वे अपनी एफएक्यू मानकों के अनुरूप उपज को मोबाइल पर प्राप्त संदेश के अनुसार निर्धारित तिथि पर या अधिकतम 10 दिनों के भीतर संबंधित क्रय केंद्र पर लाकर तुलाई करवाएं ताकि उनकी उपज का भुगतान समय पर सुनिश्चित किया जा सके।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार बोन्दिया द्वारा संदीप शर्मा मे. संदीप इन्टरप्राइजेस, एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राजस्थान) से प्रकाशित एवं पेपर प्रिंट इंडस्ट्रीज 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल (मध्यप्रदेश) से मुद्रित, सम्पादक : सुनील गंगराड़े, समन्वयक : रीतेश कोंडले. इस अंक का मूल्य रुपये 12/- वार्षिक शुल्क रुपये 600/- भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक कार्यालय का पंजीयन क्रं. Raj/HIN/2000/3239

कृषक जगत
संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्दिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

अमृत जगत

सज्जन से की गई प्रार्थना कभी निष्फल नहीं होती।

- महाकवि कालिदास

दस्तावेजों की विसंगतियाँ : ग्रामीण भारत की अनसुनी पीड़ा

ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी भू-राजस्व ऋण पुस्तिका (B-1/खसरा) में वही नाम दर्ज पाए जाते हैं जो प्रचलन में रहे—भले ही वे मात्राओं, उच्चारण या वर्तनी की दृष्टि से गलत ही क्यों न हों। नई पीढ़ी की साक्षरता बढ़ने से अब स्कूल प्रमाण-पत्र के अनुरूप नाम दर्ज कराने की प्रवृत्ति बढ़ी है, लेकिन चालीस-पचास वर्ष से अधिक आयु वाले किसानों के दस्तावेज़ों में प्रचलित नामों की त्रुटियाँ आज भी आम हैं। इन त्रुटियों के कारण दस्तावेज़ों में असमानता बनी रहती है, और उन्हें ठीक करवाना अक्सर किसानों के लिए चुनौतियों से भरा होता है।

सितंबर 2010 में जब आधार पंजीयन की शुरुआत हुई, तब बड़ी संख्या में नामों में गलतियाँ हुईं, जिन्हें ठीक कराने में वर्षों लगे। दुर्भाग्य से यह समस्या आज भी पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। खेतों के कागज़ों और आधार में नाम का अंतर, परिवार के मुखिया की मृत्यु पर उत्तराधिकार दर्ज करते समय पटवारी स्तर पर होने वाली त्रुटियाँ, मात्राओं का गलत लिखना तथा ग्रामीणों द्वारा बताए गए उपनाम या लघुनाम को ही दर्ज कर देना—ये सभी कारण आगे चलकर किसान के लिए परेशानी का कारण बनते हैं।

राजू, मधु, मुन्नू जैसे घरेलू लघुनाम अक्सर रिकॉर्ड में वास्तविक नाम के स्थान पर चढ़ जाते हैं। जब किसान को किसान क्रेडिट कार्ड बनवाना हो या किसी सरकारी लाभ का

आवेदन करना हो, तब दस्तावेज़ों के नाम मेल न खाने पर उन्हें बार-बार तहसील और बैंक के चक्कर लगाने पड़ते हैं। इस प्रक्रिया में समय के साथ मानसिक उत्पीड़न भी झेलना पड़ता है।

आज आधार केवल पहचान पत्र नहीं, बल्कि बैंकिंग, छात्रवृत्ति, सरकारी योजनाओं, परीक्षाओं और सार्वजनिक सेवाओं तक पहुँच का मूल आधार बन चुका है। ऐसे में सभी दस्तावेज़ों—आधार, पैन कार्ड, स्कूल अंकसूची, भू-राजस्व रिकॉर्ड—में नाम और जन्मतिथि का समान होना अत्यंत आवश्यक है। शहरी क्षेत्रों में जागरूकता अधिक होने से यह सुधार अपेक्षाकृत सरल है, परंतु ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिति अभी भी चुनौतीपूर्ण है।

ग्रामीणों—विशेषकर किसानों के लिए दस्तावेज़ों में एकरूपता सुनिश्चित करना अब एक अनिवार्य प्रशासनिक सुधार होना चाहिए। इसके लिए बड़े पैमाने पर अभियान चलाने की आवश्यकता है, ताकि नामों और जन्म तिथियों में असमानता दूर हो और किसान योजनाओं का लाभ सहजता से प्राप्त कर सकें।

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान लंबे समय तक मुख्यमंत्री रहे हैं और ग्रामीण जीवन की वास्तविकताओं से भली-भाँति परिचित हैं। उनके पास इस दिशा में व्यापक सुधार करने का अवसर और अधिकार, दोनों हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में दस्तावेज़ सुधार अभियान शुरू करवाकर वे करोड़ों किसानों की प्रशासनिक समस्याओं को अत्यंत हद तक सरल कर सकते हैं।

यह पहल केवल सुविधा नहीं, बल्कि किसान सम्मान और सुशासन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगी।

पर्यावरण और स्वास्थ्य की राह

क्यों जरूरी है वनस्पति-आधारित आहार ?

✦ ज्ञान चंद पाटनी

जलवायु परिवर्तन से निपटने के वैश्विक प्रयास अपेक्षित परिणाम नहीं दे पा रहे, जबकि उपभोक्तावादी जीवनशैली ग्रीनहाउस गैसों को और बढ़ा रही है। वैज्ञानिकों के अनुसार पादप-आधारित आहार अपनाना उत्सर्जन घटाने का प्रभावी तरीका है। पेड़-पौधों पर आधारित खाद्य पदार्थ न केवल पर्यावरण को बचाते हैं, बल्कि मानव स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाते हैं, जिससे स्थायी विकास की राह सुगम होती है।

जलवायु परिवर्तन की चुनौती से निपटने के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर लगातार प्रयास हो रहे हैं, लेकिन कोई खास सफलता नहीं मिल पा रही। आधुनिक विकास की परिभाषा और उपभोक्तावाद के चलते ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को नियंत्रित करना अब भी बड़ी चुनौती है। इस दौर में पर्यावरण अनुकूल जीवनशैली को अपनाना जरूरी हो गया है। इसके लिए आमजन को खुद भी जागरूक होना पड़ेगा। खानपान की आदतों को पर्यावरण अनुकूल बनाकर हम जलवायु परिवर्तन के खतरे को कम करने में अपना योगदान दे सकते हैं। इस बात को समझना होगा कि पेड़-पौधों पर आधारित खाद्य पदार्थों को बढ़ावा देने से जलवायु परिवर्तन की समस्या से निपटना संभव है और यह इंसानों के स्वास्थ्य के लिए भी बेहतर है।

संयुक्त राष्ट्र के जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (आईपीसीसी) की रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि मांस और अन्य पशु उत्पादों की बजाय वनस्पति-आधारित आहार अपनाने से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में काफी कमी आती है। इससे वैश्विक तापमान वृद्धि को नियंत्रित करने में मदद मिलती है। इसके साथ ही ऐसे आहार से हृदय रोग, टाइप 2 मधुमेह जैसे रोगों का जोखिम भी कम होता है, जिससे इंसानी सेहत में भी सुधार होता है।

असल में पशु ग्रीनहाउस गैसों के बड़े स्रोतों में से एक हैं। मवेशी मीथेन जैसी गैसों का उत्सर्जन करते हैं, जो तापमान में कार्बन डाइऑक्साइड से कई गुना अधिक वृद्धि करती हैं। मीथेन का उत्पादन पशुओं की सामान्य पाचन प्रक्रिया का हिस्सा है और पशु आधारित खाद भी मीथेन उत्सर्जन को बढ़ावा देती है।

पेड़-पौधे यानी पादप आधारित खाद्य पदार्थों के उत्पादन में पशु आधारित उत्पादों की तुलना में कम भूमि, कम पानी और कम ऊर्जा की आवश्यकता होती है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव कम होता है। विभिन्न रिपोर्टों से यह भी पता चलता है कि 2050 तक अगर मांस और डेयरी की खपत में उल्लेखनीय कमी आ जाए और लोग केवल पादप-आधारित खाद्य पदार्थों को अपनाएं, तो ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में 70 प्रतिशत तक की आश्चर्यजनक कमी हो सकती है।

पादप आधारित आहार एक संतुलित और पौष्टिक आहार माना जाता है, जो शरीर को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करता है। इस आहार में फलों, सब्जियों, दालों, मेवों और साबुत अनाज की प्रचुर मात्रा होती है, जो शरीर को कैंसर, उच्च रक्तचाप और मोटापे जैसी बीमारियों से बचाते हैं।

कई प्रमुख रिपोर्टों और सर्वेक्षणों से पता चलता है कि पादप आधारित आहार अपनाने वाले लोगों की संख्या बढ़ रही है और यह प्रवृत्ति भविष्य में और भी तेज हो सकती है। संयुक्त राष्ट्र, विश्व स्वास्थ्य संगठन और विश्व बैंक सहित कई अंतरराष्ट्रीय संस्थान पादप आधारित आहार को जलवायु परिवर्तन से लड़ने में एक प्रभावी उपाय मानते हैं। पशु आधारित उत्पादों के कारण पैदा होने वाली मीथेन को कम करने के लिए न्यूजीलैंड और डेनमार्क जैसे कुछ देशों ने कर नीति भी लागू करने की योजना बनाई है, ताकि लोग मांस की बजाय पादप आधारित आहार की ओर बढ़ें। पर्यावरणीय हितों के कारण विश्वभर में शाकाहार ही नहीं, वीगन आहार की तरफ भी झुकाव बढ़ रहा है। वीगन आहार एक ऐसा शाकाहारी आहार है जिसमें केवल पेड़-पौधों से प्राप्त खाद्य पदार्थ शामिल होते हैं। इसमें कोई भी पशु-उत्पाद जैसे मांस, मछली, डेयरी (दूध, दही, पनीर), अंडे और शहद आदि शामिल नहीं होते। यह आहार पशु-आधारित पदार्थों से मुक्त होता है।

इसमें दोराय नहीं है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए पशु आधारित आहार की बजाय पादप आधारित आहार को बढ़ावा देना होगा। पशु उत्पादों पर सब्सिडी को कम करने के साथ फलों, अनाज और सब्जियों की खेती को बढ़ावा देना जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य दोनों के लिहाज से आवश्यक है।

पेड़—पौधों पर आधारित खाद्य पदार्थों को बढ़ावा देकर न केवल पर्यावरण और जलवायु को संरक्षित किया जा सकता है बल्कि मानव स्वास्थ्य में भी सुधार किया जा सकता है। इसके जरिए प्राकृतिक संसाधनों की बचत, पर्यावरण संरक्षण तथा स्वास्थ्य सुधार संभव है। इसलिए, सरकारों, नीति निर्माताओं और समाज को इस दिशा में सार्थक कदम उठाने चाहिए। जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक चुनौती से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए सरकारों को तो सक्रियता दिखानी ही होगी, आम आदमी को भी इस कार्य में अपना योगदान देना होगा।

(सप्रेस)

● डॉ. दीपक हरि रानडे
● डॉ. स्मिता अग्रवाल
● डॉ. मनोज कुमार कुरील

पर्यावरण संरक्षण और जैव विविधता के संरक्षक

शीशम के वृक्ष

मध्यप्रदेश में खंडवा कृषि महाविद्यालय के हरे-भरे परिसर में लगे शीशम के वृक्ष न केवल सौंदर्य का प्रतीक हैं, बल्कि यह वृक्ष पर्यावरण, कृषि और जैव विविधता की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। आज जब जलवायु परिवर्तन, भूमि क्षरण और जैव विविधता की हानि जैसे गंभीर मुद्दे सामने हैं, ऐसे में शीशम वृक्ष इन समस्याओं के समाधान का एक सशक्त प्राकृतिक माध्यम बनकर उभरा है।

कौन है शीशम वृक्ष

शीशम, जिसेइंडियन रोज़वुड (Indian Rosewood) कहा जाता है, एक कठोर, दीर्घायु और बहुउपयोगी वृक्ष है। यह फैबेसी कुल का सदस्य है। यह वृक्ष सामान्यत: 25-30 मीटर तक ऊँचा होता है और इसके पत्ते तीन भागों में विभाजित (ट्राइफोलेट) होते हैं। शीशम का प्राकृतिक आवास गंगा-यमुना के मैदानी क्षेत्रों से लेकर मध्य भारत तक फैला हुआ है।

कृषि में शीशम की उपयोगिता

भूमि संरक्षण : शीशम की गहरी जड़ें मिट्टी को बाँधकर रखती हैं, जिससे मिट्टी का बहना, झड़ना रुकता है।

नाइट्रोजन स्थिरीकरण: यह वृक्ष मिट्टी में नाइट्रोजन का स्तर बढ़ाता है, जिससे आसपास की फसलों की वृद्धि बेहतर होती है।

कृषि-वृक्षारोपण में सहायक: शीशम की छाया और पत्तियाँ खेतों का तापमान संतुलित रखती हैं, जिससे फसलों पर गर्मी का असर कम होता है।

लकड़ी एवं ईंधन का स्रोत : इसकी लकड़ी अत्यंत कठोर, टिकाऊ और दीमक-रोधी होती है, जिससे कृषि उपकरण, फर्नीचर, दरवाजे, खिड़कियाँ और ईंधन तैयार किए जाते हैं।

पशु चारे के रूप में उपयोग: शीशम की कोमल पत्तियाँ पशुओं के लिए पौष्टिक चारा हैं।

जैव विविधता में शीशम की भूमिका

शीशम वृक्ष न केवल कृषि के लिए उपयोगी है बल्कि जैव विविधता के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है-

कीट-पतंगों और परागणकर्ताओं का निवास: शीशम के फूलों में मधुमक्खियाँ, तितलियाँ और अन्य परागण करने वाले कीट बड़ी संख्या में आते हैं। यह परागण गतिविधि स्थानीय फसलों की उत्पादकता बढ़ाने में भी सहायक होती है।

पक्षियों का आश्रय स्थल: इसकी घनी छाया और मजबूत शाखाएँ विभिन्न पक्षियों को घोंसले बनाने के लिए सुरक्षित स्थान प्रदान करती हैं। तोते, मैना, बुलबुल और कबूतर जैसे पक्षी शीशम वृक्ष में सामान्यत: पाए जाते हैं।

सूक्ष्म जीवों के लिए पारिस्थितिकी तंत्र: शीशम के आसपास की मिट्टी में सूक्ष्म जीवों की विविधता अधिक होती है, जो भूमि की उर्वरता को बढ़ाते हैं।

स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन: शीशम का पेड़ जलवायु को संतुलित रखता है, कार्बन डाइऑक्साइड सोखकर हवा को साफ करता है और पर्यावरण की स्थिरता में मदद करता है।

वन्यजीव संरक्षण में भूमिका: ग्रामीण और कस्बाई इलाकों में यह पेड़ गिलहरी, छिपकली और कीट खाने वाले पक्षियों के लिए भोजन और घर देता है।

पर्यावरणीय और सामाजिक दृष्टिकोण से महत्व

● ग्रामीण क्षेत्रों में शीशम की लकड़ी रोजगार का एक बड़ा स्रोत है।

● यह वृक्ष जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में प्राकृतिक कवच की तरह कार्य करता है।

● इसकी उपस्थिति से जैव विविधता का संरक्षण होता है, जो पृथ्वी के पारिस्थितिक संतुलन के लिए अत्यंत आवश्यक है।

महाविद्यालय परिसर में लगे शीशम वृक्ष यह प्रमाणित करते हैं कि जब वैज्ञानिक सोच और पर्यावरणीय संवेदना साथ चलती है, तो सतत् विकास का मार्ग प्रशस्त होता है।

शीशम केवल एक वृक्ष नहीं, बल्कि कृषि, पर्यावरण और जैव विविधता का त्रिवेणी संगम है। इसके संरक्षण और संवर्धन से न केवल हमारे महाविद्यालय का वातावरण हरित बनता है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्थायी और संतुलित भविष्य की नींव भी रखी जाती है।

• डॉ. निशिथ गुप्ता

पपीते की खेती

पपीता उष्णकटिबंधीय एवं उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में उगाई जाने वाले प्रमुख फलों में से एक है। यह विटामिन 'ए' व कई औषधीय गुणों से भरपूर होता है। इसके औषधीय गुणों एवं आर्थिक रुप से लाभकारी होने के कारण पिछले कुछ वर्षों से किसान भाइयों ने इसकी खेती की ओर अधिक ध्यान देना शुरु किया है, जिसके कारण क्षेत्रफल की दृष्टि से देखें तो आज यह हमारे देश के पांच प्रमुख फलों में से एक है। इसके फलों का दूध विभिन्न प्रकार के रोग एवं व्याधियों के उपचार के लिए उपयोग में लाया जाता है।

भूमि:

पपीते की सफल बागवानी के लिये गहरी और उपजाऊ, सामान्य पी-एच मान वाली बलुई दोमट मृदा जिसमें जल निकास की उचित व्यवस्था हो, उपयुक्त होती है। पपीते के पौधे जल भराव के लिए संवेदनशील होते हैं अत: वह क्षेत्र जहां पानी रुकने की संभावना होती है, इसकी खेती के लिए उपयुक्त नहीं होता हैं।

प्रवर्धन:

पपीता का प्रवर्धन मुख्य रूप से बीज के द्वारा ही किया जाता है। एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में पपीता लगाने के लिए लगभग 2500 सें 3000 पौधों की आवश्यकता होती है, जोकि गायनोडायोसियस किस्मों मे लगभग 80-100 ग्राम बीजों सें प्राप्त हो जाते हैं जबकि परंपरागत किस्मों के लिए 400-500 ग्राम बीजों की आवश्यकता होती है।

उन्नत प्रजातियां:

पूसा नन्हा, पूसा ड्वार्फ, पूसा डेलिशियस, पूसा मैजेस्टी, पूसा जायंट, सूर्या, कुर्ग हनीड्यू, को. 1, को. 2, को. 3, को. 4

पौधे तैयार करने की विधि:

पपीते का स्वस्थ पौध तैयार करना बहुत ही महत्वपूर्ण है। बीज बोने के लिए 6X8'' इंच आकार के पॉलीथिन की थैलियों का प्रयोग किया जाता हैं। बोने से पहले किसी भी रसायनिक फफूंदीनाशक से बीजों का उपचार करें तथा बीजों को 1.0 सेमी की गहराई पर थैलियों में बीचों-बीच बोयें। बीज बोने के बाद उनकी समय-समय पर सिंचाई करते रहें। साधारणत: पपीते का बीज नर्सरी में रोपने की निर्धारित तिथि से दो महीने पहले बोयें। इस प्रकार पौधे मुख्य क्षेत्र में रोपाई के समय करीब 20 से 25 सेमी ऊंचाई के हो जाते हैं।

खेत की तैयारी एवं पौध रोपण:

पपीते के पौधे लगाने से पहले खेत की अच्छी तरह से जुताई करके उसे समतल कर लें ताकि सिंचाई के समय या वर्षा ऋतु में जलभराव न हो। पपीता के पौधे मुख्य खेत में लगाने के लिए 2X2 मीटर की दूरी पर 50X50X50 सेमी (लंबाईX चौड़ाईX गहराई) आकार के गड्ढे खोद ले परन्तु बौनी किस्मों जैसे पूसा नन्हा के लिए यह दूरी 1.5X1.5 मीटर रखे। पौधों की रोपाई करते समय यह ध्यान रखें कि डायोसियस किस्म के 2-3 पौधे तथा गायनोडायोसियस किस्म में एक पौधा प्रति गड्ढे में लगायें। रोपण के बाद प्रत्येक पौधे की हल्की सिंचाई करें।

खाद एवं उर्वरक:

पपीते के एक फल देने वाले पौधे को 200-250 ग्राम नाइट्रोजन, 200-250 ग्राम फास्फोरस तथा 250 से 500 ग्राम पोटाश देने से अच्छी उपज प्राप्त होती है। उपरोक्त पोषक तत्वों के लिए 450 से 550 ग्राम यूरिया, 1200 से 1500 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट तथा 450-850 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश लेकर उन्हें आपस में मिला लें। इसके बाद चार बराबर भागों में बांटकर प्रत्येक माह के शुरू में जुलाई से अक्टूबर तक पौधे की छांव के नीचे पौधे से 30 सेमी की गोलाई में देकर मृदा में अच्छी तरह मिला दें। खाद देने के बाद हल्की सिंचाई कर दें। इसके अतिरिक्त सूक्ष्म तत्व बोरॉन (1 ग्राम प्रति लीटर पानी में) तथा जिंक सल्फेट (5 ग्राम प्रति लीटर पानी में) का छिड़काव पौध रोपण के चौथे एवं आठवें महीने में करें।

सिंचाई:

पपीता उथली जड़ वाला पौधा होने के कारण सही समय पर पानी देना जरूरी होता है। जब तक पौधा फलन में नहीं आता तब तक हल्की सिंचाई करें, जिससे पौधे जीवित रह सकें। अधिक पानी देने से पौधे काफी लम्बे हो जाते हैं तथा विषाणु रोग का प्रकोप भी अधिक होने की संभावना होती है। फल लगने से लेकर पकने तक पौधों को अधिक सिंचाई की आवश्यकता होती है। पानी की कमी के कारण फल झड़ने लगते हैं। गर्मी के दिनों में एक सप्ताह के अंतराल पर तथा जाड़े के दिनों में 12-15 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करें। मृदा नमी को संरक्षित करने के लिए पौधे के तने के चारों तरफ सूखे खरपतवार या काली पॉलीथिन की पलवार बिछायें।

फलों की तुड़ाई:

पपीता का पौधों में रोपण के लगभग 9-10 महीनों के अन्दर फल लगने प्रारम्भ हो जाते है। फल लगने के 120-130 दिन के बाद वो पकने लगते हैं उस समय इन्हे तोड़ लें। फलों का रंग गहरा हरे रंग से बदलकर हल्का पीला होने लगता है यह रंग फल के शीर्ष भाग सें बदलना प्रारम्भ होता है। जब पीलापन शुरू हो जाये तब डंठल सहित फल की तुड़ाई कर लें।

फसलों में राइजोबियम की उपयोगिता

• गिरिराज चौधरी • हंसा चौधरी

भारत एक कृषि प्रधान देश है जिसमें लगभग 60 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। भारत दलहनी फसलों का एक प्रमुख उत्पादक देश है, विश्व में दलहन उत्पादन में भारत का प्रथम स्थान है। जिसमें विभिन्न प्रकार के दलहनी फसलों की खेती की जाती है जैसे चना, मूँग, मटर, उड़द, अरहर, लोबिया, मूँगफली, सोयाबीन इत्यादि, जो शाकाहारी भोजन में प्रोटीन का मुख्य स्त्रोत है, दलहनी फसलों में जैव उर्वरकों के प्रयोग करने से वायुमंडल में उपस्थित नत्रजन पौधों को नाइट्रेट के रूप में सुगमता से उपलब्ध होती है तथा मृदा में पहले से मौजूद अघुलनशील पोषक तत्व जैसे फास्फोरस आदि घुलनशील होकर पौधों को आसानी से उपलब्ध होते हैं। चूंकि जीवाणु प्राकृतिक है, इसलिए इनके प्रयोग से भूमि की उर्वराशक्ति बढ़ती है और पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव भी नहीं पड़ता। जैव उर्वरक रसायनिक उर्वरकों के पूरक भी है, रसायनिक उर्वरक के पूरक के रूप में जैव उर्वरक के प्रयोग से हम बेहतर परिणाम प्राप्त कर सकते हैं।

जैव उर्वरक

जैव उर्वरक एक जीवित उर्वरक है जो सूक्ष्मजीव जैसे जीवाणु, कवक आदि किसी नमी धारक पदार्थ के साथ मिश्रित होते हैं जो भूमि में डालने पर उसकी उपज बढ़ाने के साथ साथ उर्वराशक्ति में भी वृद्धि का कार्य करते हैं। सूक्ष्मजीवों की निर्धारित मात्रा को किसी नमी धारक धूलीय पदार्थ के साथ तैयार किये जाते हैं यह प्राय: 'कल्चर' के नाम से बाजार में उपलब्ध है।

राइजोबियम क्या है ?

दलहनी (फलीदार) पौधों की जड़ों में ग्रंथियां पाई जाती हैं उनमें राइजोबियम नामक जीवाणु पाया जाता है जो वायुमंडलीय नत्रजन का स्थिरीकरण कर फसल की पैदावर बढ़ाने के साथ-साथ उसकी उर्वरा शक्ति भी बढ़ाने में सहायक है। जो दलहनी फसलों में प्रयोग किया जाता है।

बीज उपचारित करने की विधि

- बोने से पूर्व बीज को साफ पानी से धोकर सुखा लें।
- बीज उपचारित करने से पहले 100 ग्राम गुड़ आधा लीटर पानी में डालकर पन्द्रह मिनट तक उबालें। यदि गुड़ न हो तो गोंद का भी प्रयोग किया जा सकता है।
- घोल को अच्छी तरह ठंडा होने पर इस घोल में एक पैकेट राइजोबियम जीवाणु कल्चर का घोल डालें, और अच्छी तरह कल्चर को घोल में मिलायें।
- आधा एकड़ के लिए पर्याप्त बीज को कल्चर के घोल में डालकर साफ हाथों से अच्छी तरह मिला दें।

राइजोबियम कल्चर के लाभ

राइजोबियम जीवाणु वातावरण मे व्याप्त नत्रजन का स्थिरीकरण कर पौधों की जड़ों तक घुलनशील अवस्था में पहुंचाते हैं। अत: दलहनी फसलों में रसायनिक खाद की कम आवश्यकता होती है। राइजोबियम के प्रयोग से दलहन की उपज में कई प्रतिशत तक की बढ़ोतरी होती है (अपवाद=राजमा)। राइजोबियम के प्रयोग से भूमि में नत्रजन की मात्रा बढ़ जाती है तथा उर्वरा बनी रहती है। दलहनों की जड़ों में विद्यमान जीवाणुओं द्वारा संचित नत्रजन अगली फसल द्वारा ग्रहण किया जाता है। राइजोबियम द्वारा यौगिकीक्रत नत्रजन कार्बनिक रूप में होने के कारण पूर्ण रूप से पौधों को प्राप्त होता है

सावधानियाँ

- प्रत्येक दलहन विशेष को उसके विशेष कल्चर से ही उपचारित करें।
- कल्चर के पैकेट पर लिखी अंतिम तिथि से पहले प्रयोग करें।
- बीज उपचारित करने की सारी तैयारियाँ करने के बाद कल्चर का पैकेट खोलें।
- बीजों को उपचारित करके कुछ समय के लिए छायादार जगह पर सुखाएँ, फिर सुखाने के तुरंत बाद बुवाई करें।
- यदि बीजों को कल्चर के साथ-साथ कीटनाशक व फफूंदनाशक रसायनों से उपचारित करना हो तो क्रमश: फफूंदनाशक, कीटनाशक और अंतत: राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें।
- गुड़ और पानी का घोल ठंडा होने के उपरांत उसमें धीरे-धीरे कल्चर को डालें।
- बीज उपचार करते समय हाथों के दस्ताने व मुँह पर मास्क अवश्य पहनें।

ब्रूसीलोसिस रोकथाम के उपाय

● शशि प्रधान ● कविता रॉय
● ब्रजेश सिंह ● धवल कुमावत
shee1811@gmail.com

'ब्रूसीलोसिस एक अत्यंत संक्रामक रोग है, जो ब्रूसेला जाति के जीवाणु द्वारा उत्पन्न होता है।'

- इसे 'लहरदार बुखार', 'भू–मध्यसागरीय ज्वर', 'माल्टा ज्वर' के नाम से भी जाना जाता है।
- ब्रूसीलोसिस मुख्यतः मवेशियों शूकर, बकरी, भेड़ और कुत्तों को होने वाला पशुजन्य रोग है।
- संक्रमण मनुष्य में संक्रमित सामग्री जैसे कि जन्म के समय निकलने वाले पदार्थ के साथ पशुओं के प्रत्यक्ष संपर्क या पशु उत्पाद सेवन से अप्रत्यक्ष रूप या हवा में उपस्थित वातानीत एजेंटों को सांस के भीतर लेने से फैलता है।
- मनुष्य में संक्रमण का प्रमुख स्रोत कच्चे दूध का सेवन एवं कच्चे दूध से निर्मित पदार्थ हैं।

कारण:

- ब्रूसीलोसिस बैक्टीरिया ब्रूसेला की प्रजातियों जैसे कि ब्रूसेला अबोर्टस, मेलिटेंसिस, सुईस, केनिस के कारण होता है।
- ये संक्रमित जानवरों के मूत्र, दूध एवं गर्भनालीय तरल पदार्थों में अधिक संख्या में निकलते हैं।
- ब्रूसेला प्रजाति धूल, गोबर, पानी, गाढ़े घोल, गर्भपात भ्रूण, मिट्टी, मांस और डेयरी उत्पादों में लंबी अवधि तक जीवित रह सकते हैं।
- उष्मायन अवधि अधिक परिवर्तनशील होती हैं। आमतौर पर उष्यामन अवधि दो से चार सप्ताह होती है। लेकिन एक सप्ताह से दो महीने या उससे अधिक समय तक हो सकती है।

लक्षण: शुरूआती लक्षणों में बुखार, कमजोरी, बेचैनी, आहार, सिरदर्द, भूख में कमी, मांसपेशियों और जोड़ों और पीठ में दर्द, थकान शामिल है।

कुछ संकेत और लक्षण लंबे समय तक रह सकते हैं जैसे कि– आवर्तक बुखार, गठिया, अंडकोष और अंडकोष के क्षेत्र की सूजन, कोनिक थकान, अवसाद, यकृत और तिल्ली की सूजन। जटिलताएं शरीर की किसी भी अंग प्रणाली को प्रभावित कर सकती है। रोग द्वारा मृत्यु की संख्या अधिक नहीं है, किन्तु रोग शीघ्र दूर नहीं होता है।

निदान : इसलिए निदान के लिए प्रयोगशाला परीक्षणों के सहयोग की आवश्यकता होती है।

संभावित नैदानिक परीक्षण 2 तरह का होता है। पहला रोज़ बंगाल टेस्ट (RBPT) और दूसरा स्टैंडर्ड एग्लूटीनेशन टेस्ट (SAT) स्क्रीनिंग के लिये रोज़ बंगाल टेस्ट (RBPT) यदि संभावित नैदानिक परीक्षण सकारात्मक है, तो नैदानिक पुष्टि परीक्षण के तहत दो परीक्षणों में से एक रोग पुष्टि के लिये किया जाता है।

पुष्टि नैदानिक परीक्षण : रक्त या अन्य नैदानिक नमूने से ब्रूसेला प्रजाति को अलग किया जाता हैं।

संभावित प्रयोगशाला नैदानिक परीक्षण एग्लोटिनेटिंग एंटीबॉडी (आरबीटी, एसएटी) संख्या पता लगाने पर आधारित है। उनको गैर–एग्लोटिनेटिंग एंटीबॉडी का पता लगाने वाले परीक्षण के साथ एलिसा आईजीजी परीक्षण और कूम आजीजी के माध्यम से किया जाता है।

- इस रोग के तथा इंन्फ्लुएंजा मलेरिया, तपेदिक, मोतीझिरा आदि रोगों के लक्षण आपस में मिलने के कारण विशेष समूहन परीक्षण तथा त्वचा में टीका परीक्षण से भी रोग का निदान होता है।

पशुओं का छूनदार गर्भपात :

- जीवाणुजनित इस रोग में गोपशुओं तथा भैंसों में गर्भावस्था में अंतिम त्रैमास में गर्भपात हो जाता है। मनुष्यों में यह उतार चढ़ाव वाला बुखार (अन्ड्यूलेण्ट फीवर) नामक बीमारी पैदा करता हैं। पशुओं में गर्भपात से पहले योनी से अपारदर्शी पदार्थ निकलता है तथा गर्भपात के बाद पशु की जेर (Placenta) रूक जाती है। इसके अतिरिक्त यह जोड़ों में आथ्रायटिस (जोड़ों की सूजन) पैदा कर सकता है।

उपचार एवं रोकथाम :

- अब तक इस रोग का कोई प्रभावकारी इलाज नहीं है।
- इसकी रोकथाम के लिए बछियों में 3–6 माह की आयु में ब्रूसेल्ला अबोर्टस स्ट्रेन–19 के टीके लगाए जा सकते हैं।
- पशुओं में प्रजनन की कृत्रिम गर्भाधान (AI) पद्धति अपनाकर भी इस रोग से बचा जा सकता है।
- रोग प्रतिषेध के लिए पाश्चुरीकृत दूध को काम में लाना चाहिए।
- चिकित्सा में उचित परामर्श तथा सल्फोनामाइड, स्ट्रोटोमाइसिन आदि का प्रयोग होता है।

बकरियों के रोग व उपचार

● डॉ. अनुप्रिया कुलचानिया, राजस्थान कृषि अनुसन्धान संस्थान दुर्गापुरा, जयपुर
● डॉ. प्रह्लाद पूनिया, यंग प्रोफेशनल–2, केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, सिरसा, हरियाणा
● महेंद्र कुमार घासोलिया, श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर

बकरी जिसे गरीबों की गाय भी कहा जाता है किसानों के लिए आय बढ़ाने का अच्छा जरिया है। सामान्यतः बकरी पालन में बहुत कम खर्च आता है परन्तु यदि बकरियों को रोग लग जाए तो वह आपके लिए मुसीबत का कारण हो सकता है। इसलिए आज आपके लिए बकरियों को सामान्यतः लगने वाले रोग एवं उसका उपचार किस तरह कर सकते हैं बता रहे हैं।

हाजमे तथा भूख लगने की दवाएं:

बकरी को भूख न लगने पर, कब्ज, कमजोरी इत्यादि की शिकायत होने पर उसे HB Strong नामक दवा एक दिन में 2.5 ग्राम दो बार लगातार तीन चार दिन तक दी जा सकती है. इसके अलावा इन्ही सब समस्याओं के लिए Rumbion Bolus नामक आयुर्वेदिक दवा का उपयोग HB Strong Powder के साथ किया जा सकता है। इन दवाओं का उपयोग सामान्य हेल्थ टॉनिक के रूप में भी किया जा सकता है और बकरियों को यह दवा गुड़ के साथ भी दी जा सकती है।

लीवर टॉनिक:

अक्सर बकरियों का लीवर वर्षा ऋतु में खराब हो सकता है, इसलिए इस बकरियों को लीवर सम्बंधी कोई भी बीमारी होने पर उन्हें LIV 52 Protec (जिसे हिमालय ड्रग द्वारा निर्मित किया गया है) की 15–20 मिली दिन में दो बार लगातार 8–10 दिनों तक देना होगा। उपर्युक्त दवा के अलावा स्पअवस जो की एक इंडियन हर्ब है की 8–12 ग्राम मात्रा भोजन या गुड़ के साथ मिलाकर दिन में एक से दो बार 8–10 दिनों तक खिलायें।

अतिसार डायरिया का आयुर्वेदिक ईलाज:

यदि बकरी को डायरिया या अतिसार की समस्या हो तो बकरी की बीमारियों का आयुर्वेदिक ईलाज करने के लिए उसे Diovet (जिसका निर्माण Charak Phermaceuticals किया गया है) 25 मिली दवा दिन में दो बार दी जा सकती है। इसके अलावा इसी समस्या के लिए Neblon जो की एक इंडियन हर्ब है का उपयोग 6–10 ग्राम दिन में 2–3 बार छह घंटे के अन्तराल में किया जा सकता है यह आयुर्वेदिक दवा चावल के मांड या गुड़ के साथ दी जा सकती है।

अपच या पेट की सूजन में प्रयोग में लायी जाने वाली दवा:

यदि बकरी पेट में सूजन या अपच जैसी बीमारी से ग्रस्त हो तो बकरी की बीमारियों का आयुर्वेदिक ईलाज करने के लिए उसे टिम्पोल (जो की एक इंडियन हर्ब है) की पेट में गैस जमा होने के कारन होने वाली सूजन से निजात देने के लिए 20–25 ग्राम दवा 250 मिली गुनगुने पानी में दिन में दो बार दी जा सकती है। यदि पशु को अधिक तकलीफ है तो हर 4 घंटे के अंतराल में यह दवा दी जा सकती है। यदि बकरी का पेट फूल गया हो तो 250–500 मिली पानी या फिर बादाम के तेल के साथ यही दवा दिन में दो बार दी जा सकती है।

सर्दी जुकाम के लिए आयुर्वेदिक दवा:

बकरी के सर्दी जुकाम एवं ब्रांकाइटीस जैसी बीमारियों से जूझने पर इन बकरी की बीमारियों का आयुर्वेदिक ईलाज करने के लिए Caflon (जो की एक इंडियन हर्ब है) दिन में दो तीन बार 6–12 ग्राम की मात्रा में गुड़ या गरम पानी के साथ मिलाकर दी जा सकती है।

दूध बढ़ाने के लिए आयुर्वेदिक दवा:

बकरी के प्रसवोपरांत बकरी को अनेक समस्याएं जैसे दूध कम आना, चयापचयी असुविधा, थकान, थन से ठीक तरह से दूध नहीं आना, इत्यादि हो सकती हैं इन समस्याओं अर्थात् इन बकरी की बीमारियों का आयुर्वेदिक ईलाज करने के लिए Galog (एक इंडियन हर्ब) प्रतिदिन 10–15 ग्राम एक बार गुड़ के साथ मिलाकर बीस दिनों तक दी जा सकती है। इसके अलावा Payapro Bolus (डाबर द्वारा निर्मित) एक दिन में एक बार 1–2 bolus दस से पन्द्रह दिनों तक दी जा सकती है।

घाव दाद चर्मरोग की आयुर्वेदिक दवा:

बकरी की त्वचा पर समय समय पर घाव, दाद एवं अन्य चर्मरोग होते रहते हैं इन बकरी की बीमारियों का आयुर्वेदिक ईलाज करने के लिए Hima Ointment (एक इंडियन हर्ब है) का प्रयोग किया जा सकता है, लेकिन इसे त्वचा या घाव पर लगाने से पहले नीम की पत्तियों को पानी में उबालकर त्वचा या घाव को साफ करना बेहद जरुरी होता है। इसके अलावा Topicure Spray का भी उपयोग इन समस्याओं में किया जा सकता है।

जूं का आयुर्वेदिक ईलाज:

बकरी एक पशु है इसलिए अक्सर इनके शरीर में जूं, कीड़े एवं अन्य कीट अपना घर कर लेते हैं इनका आयुर्वेदिक ईलाज करने के लिए Pestoban (इंडियन हर्ब) या Peste का उपयोग पानी के साथ 1:10 के अनुपात में किया जा सकता है।

समस्या -समाधान

समस्या– सब्जियों की उन्नत एवं संकर किस्मों के बीज शासकीय स्त्रोत कौन–कौन से हैं कृपया पते की जानकारी दें।

– जगदीश सैनी

समाधान– *सब्जियों की उन्नत तथा संकर किस्मों पर विस्तार से कृषक जगत द्वारा प्रकाशित एक पुस्तक में दिया गया है। आप चाहें तो कृषक जगत से सम्पर्क करके उसे मंगा सकते हैं। शासकीय स्त्रोतों के सम्पर्क हेतु निम्न जानकारी का उपयोग करें–*

- *निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान पूसा नई दिल्ली–110012*
- *निदेशक, भारतीय बागवानी संस्थान, हिसारगट्टा लेक पोस्ट बंगलोर–560089 (कर्नाटक),*
- *निदेशक, भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, पोस्ट बाक्स नं. 01 जक्खिनी, वाराणसी–221003 (यूपी)*
- *उपसंचालक, उद्यानिकी, सागर*
- *युक्त संचालक उद्यानिकी, संचालनालय उद्यानिकी एवं प्रक्षेत्र वानिकी विन्ध्याचल भवन, भोपाल*

समस्या– मैंने सरसों लगाई है, अच्छे उत्पादन के लिये क्या करें, मार्गदर्शन करें।

– जालिम सिंह

समाधान– *आपने सरसों के अच्छे उत्पादन के महत्वपूर्ण बिन्दुओं के बारे में मार्गदर्शन चाहा है तो आप निम्न उपाय करें।*

- *अतिरिक्त पौधों को निकालना अत्यंत आवश्यक होगा क्योंकि एक इकाई क्षेत्र में निर्धारित मात्रा में पोषक तत्व उपलब्ध रहते हैं जिनका बढ़वार होकर पौधा कमजोर हो जाता है।*
- *खरपतवार प्रत्येक फसल में चुनौती बनकर खेत में रहते हैं उनको निकालना अत्यन्त आवश्यक कार्य होता है। कोई भी सिंचाई या उर्वरक देने के पहले ही खरपतवार बुआई के*

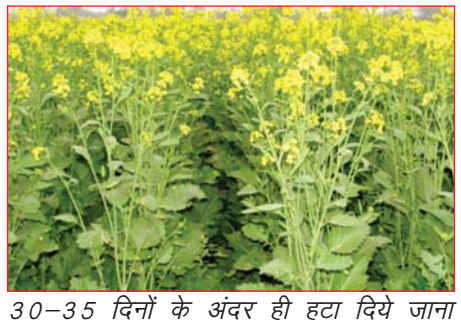

30–35 दिनों के अंदर ही हटा दिये जाना चाहिए।

- *सिंचित फसल को पहली सिंचाई बुआई के 30 दिनों बाद तथा दूसरी सिंचाई बुआई के 55–60 दिनों बाद की जाये। यदि एक ही सिंचाई का साधन हो तो पुष्प अवस्था में सिंचाई की जाये।*
- *माहो का आक्रमण प्रत्येक अवस्था में देखा गया है। 50 माहो प्रति पौध होने के तुरन्त बाद मिथाईल डेमेटान 750 मि.ली. प्रति हेक्टर की दर से दो छिड़काव 15 दिनों के अंतर से करें। मित्र कीट की सक्रियता पर नजर रखने के बाद ही यह कार्य यथा सम्भव शाम के समय करें ताकि वर्गीकरण क्रिया में सक्रिय कीटों को हानि नहीं हो पाये।*
- *पत्तों पर धब्बा रोग के बचाव हेतु मेन्कोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिनों के अंतर से दो छिड़काव किये जाये।*

समस्या– सब्जियों में लाल मकड़ी का प्रकोप होता है, बहुत हानि होती है उपाय बतायें।

– ओमप्रकाश जैनी

समाधान– *कद्दूवर्गीय फसल जैसे लोकी, कद्दू, करेला इत्यादि में लाल मकड़ी का प्रकोप प्रायः देखा गया है। विशेषकर जायद मौसम में अन्य फसलों में बैंगन में भी इसका प्रकोप अधिक होता है। यह लाल मकड़ी अपने रंग के कारण पहचानी जाती है तथा पत्तियों के निचली सतह पर जाला बनाकर रहती है तथा पत्तियों की नसों*

से रस चूसकर हानि पहुंचाती है जो पोषक तत्व पौधों को उपलब्ध होना चाहिए उनका बढ़वार करके उत्पादन प्रभावित करती है। यह कीट बहुभक्षी अर्थात् फसलों में आता है और मार्च से अक्टूबर तक सक्रिय होती है। आप निम्न उपाय करके इसके प्रकोप पर लगाम लगा सकते हैं।

- *गंधक चूर्ण 20 किलो प्रति हेक्टर की दर से भुरकाव करें। भुरकाव धूप के समय नहीं किया जाये।*
- *इसके अलावा डायमिथिएट 30 ई.सी. या मिथाईल डिमेटान– 25 ई.सी. 1 मिली प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिनों के अंतर से दो छिड़काव करें।*

समस्या– मैग्नीशियम की कमी के क्या लक्षण है?

समाधान– मैग्नीशियम की कमी में खासकर पुरानी पत्तियों का क्लोरोफिल कम हो जाता है और फलस्वरूप पौधा पीला हो जाता है। पीलापन पत्ती की शिराओं के बीच वाले भाग पर अधिकाधिक दिखाई देता है। सामान्तर शिराओं वाली पत्तियों में हरे तथा भूरे रंग की धारियां सी बन जाती हैं क्योंकि शिराएं हरी रहती हैं लेकिन बीच के भाग का रंग उड़ जाता है। यदि कमी लगातार देर तक बनी रहे तो फिर रंग लाल व भूरा हो जाता है और कई बार पत्तियां सूख भी जाती हैं।

समस्या– गंधक कमी के लक्षण बताएं?

समाधान– गंधक की कमी के लक्षण मुख्यता रेतीली जमीनों में प्रकट होते हैं। कमी के लक्षण मुख्यता नयी पत्तियों पर प्रकट होते हैं। पत्तियों का हरा रंग समाप्त होना शुरू हो जाता है। कई बार रंग धारियों में उड़ता है चौड़ी पत्ती वाले पौधों में पत्तियों का रंग पीला या सुनहरी पीला हो जाता है। पत्तियों के किनारे ऊपर या नीचे की ओर मुड़ जाते हैं। और प्याले जैसे आकार के दिखने लगते हैं।

समस्या– कौन सी फसलों को गंधक की अधिक आवश्यकता होती है?

समाधान– तिलहनी फसलों को सबसे अधिक मात्रा में गन्धक की आवश्यकता होती है। इसके साथ गंधक दलहनी फसलों को भी चाहिए। अन्य फसलों की आवश्यकता आमतौर पर मिट्टी से पूरी हो जाती हैं। लेकिन उपरोक्त फसलों के लिए फास्फोरस के स्त्रोत सिंगल सुपरफास्फेट अथवा जिप्सम का प्रयोग करना चाहिए क्योंकि सिंगल सुपर फास्फेट में 11–12 तथा जिप्सम में 18–19 प्रतिशत गंधक होती है।

समस्या– जस्ते का पौधों के पोषण में क्या महत्व है ?

समाधान– जस्ता अनेकों एंजाइमों का एक घटक होता है जैसे कार्बोनिक एनहाइड्रेस, एल्कोहल डिहाइड्रोजेनेस और विभिन्न पेप्टीडेस। अत: यह अनेकों एंजाइमी प्रतिक्रियाओं के लिए आवश्यक होता है। यह वृद्धि हार्मोनों के निर्माण में भी सहायता करता है। जिससे पौधों की बढ़वार अच्छी होती है।

समस्या– क्या जिंक सल्फेट और यूरिया मिलाकर छिड़के जा सकते हैं ?

समाधान– हां, बहुत ही सफलतापूर्वक दोनों को मिलाकर छिड़का जा सकता है। जिंक सल्फेट का घोल तेजाबी होता है। जबकि यूरिया का घोल क्षारीय होता है अत: दोनों को साथ मिलाकर छिड़कने से सामान्य घोल मिलता है। साधारणतया फसलों में जस्ते की कमी के साथ नाइट्रोजन की कमी होती है। अत: दोनों को एक साथ छिड़कने से दोनों की कमी दूर हो जाती है। यदि फसल में नाइट्रोजन की कमी ना हो तो फिर यूरिया का छिड़काव नहीं करें।

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान

कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन-0755-4248100,2554864

कृषक जगत बागवानी सीरीज

साग-सब्जी उत्पादन उन्नत तकनीक रु. 95 कोड : 016
सब्जियों में पौध संरक्षण रु. 75 कोड : 017
मशरूम एक लाभ अनेक रु. 45 कोड : 019
मिर्च की उन्नत खेती रु. 55 कोड : 020
केला उत्पादन रु. 70 कोड : 025
गुलाब बहुरंगी संशोधित संस्करण रु. 75 कोड : 027
पपीता रु. 55 कोड : 031
अदरक रु. 55 कोड : 032
फलों की खेती रु. 75 कोड : 040
सजाएं फूलों से बगिया रु. 65 कोड : 041
घर की बगिया रु. 95 कोड : 050

डाक द्वारा मंगवाने हेतु निम्नलिखित जानकारी के साथ हमारे पते पर ड्राफ्ट/ मनीऑर्डर के साथ ऑर्डर कीजिए . किताब कोड नं. पर ✔ निशान लगाएं

016 ☐ 017 ☐ 019 ☐ 020 ☐ 025 ☐ 027 ☐ 031 ☐ 032 ☐ 034 ☐ 040 ☐ 041 ☐ 050 ☐

नाम _____
ग्राम _____ पोस्ट _____ तह. _____
जिला _____ फोन/मोबा. _____
कुल राशि _____ ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या _____
संलग्न ड्राफ्ट नं. _____ मनी आर्डर रसीद क्र. _____ वी.पी. भेजें ☐

संस्थाओं द्वारा अधिक संख्या में प्रतियां खरीदने पर आकर्षक छूट. अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें.

कृपया ड्राफ्ट या मनीआर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम
14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल - 462011
फोन : 0755-4248100, 2554864, मो.: 9826255861, Email-info@krishakjagat.org
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास, इंदौर (म.प्र.) मो. : 9826021837

गृह वाटिका में उगायें सर्दी की सब्जियां, प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएं

● डॉ. अदिति गुप्ता, विषय वस्तु विशेषज्ञ
(खाद्य एवं पोषण)
कृषि विज्ञान केंद्र, चाँदगोठी, चुरू (राज.)

घर में उपलब्ध स्थान पर घर की आवश्यकता के अनुसार सब्जियों को लगाना गृह वाटिका कहलाता है घर के 5-6 सदस्यों के लिए 250-300 सेमी स्थान की आवश्यकता होती है। सर्दियां शुरू हो चुकी हैं, बाजार में हरी पत्तेदार सब्जियों के साथ ही मौसमी फलों की आवक बढ़ने लगी है, सर्दियों के मौसम में ढेर सारे मौसमी फल और सब्जियां उपलब्ध होते हैं, जो सेहत के लिहाज से काफी स्वास्थप्रद होते हैं। भारतीय औषधीय अनुसंधान परिषद् के अनुसार प्रति व्यक्ति प्रतिदिन 300 ग्राम सब्जियों का सेवन करना चाहिए जिसमें से 125 ग्राम हरे पत्ते वाली सब्जियां, 100 ग्राम जड़ व कंद वाली सब्जियाँ तथा 75 ग्राम अन्य सब्जियों का सेवन करना चाहिए तथा 120 ग्राम फलों का सेवन करना चाहिए। यदि आपके घर में पर्याप्त जगह है तो आप सर्दी की सब्जियों का लुत्फ़ घरेलु क्यारी से ही उठा सकते हैं इन सब्जियों जगह कम होने पर वर्टीकल गार्डन के रूप में भी उगाया जा सकता है। गृह वाटिका में सर्वाधिक स्थान हरे पत्ते वाली सब्जियों का होना चाहिए तथा छोटे फल के वृक्ष भी लगाये जा सकते हैं।

पालक

हरी पत्तेदार सब्जियों में पालक प्रमुख है। यह हमारे शरीर में लौह तत्व की कमी को पूरा करती है, बीजों को पंक्ति में बोयें व 30-45 दिन में पालक खाया जा सकता है उगने के दो माह बाद तक पालक खा सकते है।

पोषक तत्व: प्रोटीन, विटामिन, फॉस्फोरस, आयरन, कैल्शियम, मेग्निसयम,पोटेशियम।

फायदे: पालक जैसी हरी पत्तेदार सब्जी में विटामिन के और बी प्रचुर मात्रा में होते हैं। शरीर के लिए जरूरी मिनरल्स के साथ ही इसमें फोलिक एसिड और एस्कॉर्बिक एसिड भी होता है। एंटी-इंफ्लेमेटरी और एंटीऑक्सिडेंट तत्व भी पाए जाते हैं।

गाजर

गाजर ठंड के मौसम में ही अधिक उपलब्ध होता है। इसमें विटामिन, एंटी ऑक्सीडेंट और मिनरल्स काफी मात्रा में होते हैं। इसके सेवन से आंखों की रोशनी, त्वचा में चमक बरकरार रहती है। कैल्शियम की मात्रा होने से हड्डियों की दिक्कत दूर होती है।

एनीमिया से बचाता है। कोलेस्ट्राल के स्तर को मेंटेन करता है।

इसके बीजों को क्यारी की मेड़ बनाकर थोड़ी-थोड़ी दूरी पर बोयें। ढाई महीने में गाजर तैयार हो जाएगी। इसके बाद चार महीने तक गाजर को इस्तेमाल कर सकते हैं।

पोषक तत्व: आयरन, पोटैशियम, विटामिन, कैल्सियम, फाइबर गाजर में सबसे ज्यादा कैरोटीन होता है। इसमें विटामिन सी, डी, बी, ई और के भी काफी होता है। आंखों, स्किन के लिए काफी हेल्दी होता है गाजर का सेवन करना। सर्दियों में स्किन की समस्या से बचने के लिए भी आप इसका सेवन कर सकते हैं।

फायदे: सर्दी- जुखाम व इन्फेक्शन कम होगा व प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

मूली

सर्दियों में मूली काफी मिलती है। इसमें मौजूद

फाइटोकेमिकल्स कई तरह के कैंसर के खतरे से बचाते हैं। विटामिन सी एंटीऑक्सिडेंट की तरह काम करता है। मूली में एंटी-हाइपरटेंसिव गुण मौजूद होता है, जो हाई ब्लड प्रेशर की समस्या को कम करने का काम करता है। बीपी की शिकायत है, तो मूली का सेवन जरूर करें। इसमें पोटैशियम, फोलिक एसिड और एस्कॉर्बिक एसिड भी होते हैं, जो आपको कई शारीरिक समस्याओं से बचाते हैं। सर्दी के मौसम में अक्सर लोगों को खांसी-जुकाम होती रहती है। इसमें प्रोटीन, कैल्शियम, गंधक, आयोडीन व लौह तत्व पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होते हैं। इसमें सोडियम, फॉस्फोरस, क्लोरीन व मैग्नीशियम भी होता है। मूली में विटामिन ए भी होता है। ये ब्लड प्रेशर मेंटेन करता है। चेहरे की लालिमा बढ़ती है। इसमें एंटी-कन्जेस्टिव गुण होते हैं, जो कफ, गले की खराश, सर्दी और जुकाम से पीछा दिलाते हैं। इसके बीजों को भी मेड बनाकर उचित दुरी पर बोयें। ताज़ा मूली का स्वाद चार महीनों तक लिया जा सकता है ।

लाल टमाटर से ही तैयार करें रस

टमाटर रस तैयार करने के लिए केवल पौधे पर पका हुआ लाल टमाटर का उपयोग करें धब्बे युक्त हरे तथा अधिक पके हुए पिलपिले टमाटर को अलग कर दें, क्योंकि इसके कारण रस की गुणवत्ता खराब हो सकती है। जूस का उत्पादन, रंग तथा उसके महक टमाटर की परिपक्वता एवं उसकी उगाये जाने वाले समय एवं स्थान पर निर्भर करती है यह निर्धारित करने के लिए टमाटर जूस अच्छी किस्म का है निम्नलिखित बातों का ध्यान रखे। ● जूस गहरे लाल रंग का होना चाहिए। ● जूस में टमाटर का वास्तविक स्वाद एवं गंध होना चाहिए। ● जूस की एसिडिटी साइट्रिक एसिड के रुप में 0.4 प्रतिशत हो। ● ताजे टमाटर में उपस्थित विटामिंस की मात्रा जूस में पहुंच जाती है। जूस में इसकी धारण करने की क्षमता, जूस निकालने की विधि पर निर्भर करता है। यह देखा गया है कि बीटा कैराटीन आक्सीकरण या ऊष्मा के प्रति कुछ हद तक सहनशील है जबकि विटामिन सी की कुछ मात्रा का ह्रास होता है।

● गुणवत्ता में समरसता लाने के लिए टमाटर का एक स्थान और एक ढ़ेर से लें या जूस का उचित मिश्रण करें।

***जूस तैयार करने की विधि**- जूस तैयार करने के लिए निम्नलिखित क्रियाएं समायोजित की जाती हैं।*

***धोना एवं अनुपयुक्त भाग को अलग करना**- टमाटर को सिर्फ पानी से धो लेना ही पर्याप्त नहीं होता है क्योंकि बहुत सारी गंदगी तथा सूक्ष्म जीव जो कि टमाटर की झुर्रियों, फटे हुए भाग तथा मुड़ें हुए व अन्य भागों से चिपके रहते हैं। वे आसानी से केवल पानी से धो लेने से अलग नहीं होते हैं। अच्छी धुलाई के लिए टमाटर को पर्याप्त बहते हुए पानी में धो लें।*

***कुचलना**- ट्रिमिंग के बाद टमाटर को 4-6 टुकड़ों में काटते हैं। ताकि उबालने के*

दौरान टमाटर मुलायम हो जाये इसके बाद लकड़ी के बड़े चम्मच से कुचलकर या फ्रूट ब्रशर द्वारा ब्रिशिंग की जाती है।

***पल्प तैयार करना**- टमाटर का पल्प दो विधियों से तैयार करते हैं।*

अ-गर्मविधि, ब- ठण्डी विधि

***गर्मविधि**- कुचले हुए टमाटर को उसके रस के साथ 3-5 मिनिट तक उबालते हैं जिससे पल्प तैयार करने की क्रिया आसान हो जाती है। इस विधि को निम्न लिखित फायदे है- ● बीज और छिलके में उपस्थित पेक्टिन जूस में मिल जाती है जिससे जूस गाढ़ा हो जाता है। तथा उपस्थित एंजाईम नष्ट हो जाती है। ● उबालने के कारण आंशिक रुप से जूस पाश्चुरीकृत हो जाता है। तथा आक्सीकरण और सड़ाने वाले सूक्ष्मजीव निष्क्रिय हो जाते हैं।*

● जूस का उत्पादन दूसरी विधि की अपेक्षा ज्यादा होता है।

● कम पकाने के कारण छिलके में उपस्थित लाल रंग निकलकर जूस में मिल जाता है।

***ठण्डी विधि**- कुचले हुए टमाटर को ठण्डे रुप में ही पल्पर में डालकर पल्प तैयार किया जाता है। इस विधि में निम्न कमियां है-*

● जूस का उत्पादन गर्म विधि की अपेक्षा कम मिलता है।

● जूस निकालने के दौरान जूस में हवा प्रवेश कर जाती है। जिसके कारण विटामिन सी का आक्सीकरण हो जाता है।

● इस विधि से प्राप्त जूस अपेक्षाकृत हल्के रंग का होता है।

● कुचलना तथा पल्प तैयार करने की क्रिया शीघ्रता से सम्पन्न करनी पड़ती है जिससे कि शुरू में सूक्ष्म जीवों द्वारा सड़ने से रोका जा सकें। ● इसमें अच्छी ताजी गंध पाई जाती है।

***जूस प्राप्त करना**- व्यावसायिक विधि तथा घरेलू विधि से जूस प्राप्त करने के लिए व्यावसायिक तौर पर दो विधियां उपयोग में लाई जाती है।*

अखरोट भगाए कैंसर, मधुमेह

सेहत के लिहाज से अखरोट को बहुत अच्छा माना जाता है। इसे खाने से हृदय विकार, कैंसर और मधुमेह जैसी कई बीमारियों को रोकने में मदद मिलती है। हाल ही में हुए एक शोध में शोधकर्ताओं का दावा है कि अखरोट या उससे परिपूर्ण भोज्य पदार्थ खाने से भारत में व्याप्त हृदय विकार, कैंसर और मधुमेह जैसी कई बीमारियों को रोकने में मदद मिल सकती है। वहीं, कैलिफोर्निया वालनट कमीशन द्वारा आयोजित वैज्ञानिक अनुसंधान बैठक में बीमारी की रोकथाम में अखरोट की भूमिका और स्वस्थ जीवनशैली को बनाए रखने पर हुई चर्चा में यह बात सामने आई है।

पाक्षिक पंचांग

24 नवम्बर से 7 दिसम्बर 2025
विक्रम संवत् 2082
अगहन शुक्ल 4 से पौष कृष्ण 3 तक

दि.	माह	वार		तिथि/त्यौहार
24	नवम्बर	सोम	अगहन शुक्ल 4	विनायकी चतुर्थी व्रत
25	नवम्बर	मंगल	---------- 5	विवाह पंचमी
26	नवम्बर	बुध	---------- 6	
27	नवम्बर	गुरु	---------- 7	पंचक 10.2 दिन से
28	नवम्बर	शुक्र	---------- 8	पंचक
29	नवम्बर	शनि	---------- 9	पंचक
30	नवम्बर	रवि	---------- 10	पंचक
01	दिसम्बर	सोम	---------- 11	पंचक 7.31 रात तक
02	दिसम्बर	मंगल	---------- 12	प्रदोष
03	दिसम्बर	बुध	---------- 13	
04	दिसम्बर	गुरु	---------- 14/15	पूर्णिमा
05	दिसम्बर	शुक्र	पौष कृष्ण 1	
06	दिसम्बर	शनि	---------- 2	
07	दिसम्बर	रवि	---------- 3	

खेती की अधिक जानकारी के लिए देखें
www.krishakjagat.org

मौसम में बदलाव के मद्देनजर पशुपालन विभाग ने दी सलाह

जयपुर। प्रदेश में धीरे-धीरे सर्दी ने दस्तक देना शुरू कर दिया है तथा दिन और रात्रि के तापमान में परिवर्तन हो रहा है। ऐसे में पशुओं के स्वास्थ्य एवं उत्पादन क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने तथा पशु रोगों में वृद्धि होना संभावित है। पशु स्वास्थ्य को प्राथमिकता देते हुए रोगों की रोकथाम व अन्य सुरक्षात्मक उपाय के लिए उचित प्रबंधन हेतु पशुपालन विभाग ने प्रदेश के सभी जिलों को एडवायजरी जारी कर दी है।

पशुपालन मंत्री श्री जोराराम कुमावत ने शीत ऋतु में होने वाले रोगों से पशुधन के बचाव के लिए विभागीय अधिकारी व कर्मचारियों को तत्पर, सक्रिय एवं संवेदनशील रहकर काम करने के निर्देश दिए है। उन्होंने कहा कि मोबाइल चिकित्सा दलों का समुचित उपयोग करते हुये रोग निदान एवं नियंत्रण में लगने वाले समय को न्यूनतम किया जाए। साथ ही वैक्सीन एवं तापसंवेदी औषधियों की गुणवत्ता बनाये रखने हेतु कोल्ड चेन संधारण का पूरा ध्यान रखा जाए।

उन्होंने निर्देश दिए कि पशु चिकित्सा संस्थाओं में सम्भावित पशु रोगों की रोकथाम एवं उपचार हेतु आवश्यक टीकों एवं औषधियों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए तथा आपातकालीन स्थिति के लिये जिला स्तर पर भी इनकी पर्याप्त मात्रा आरक्षित रखी जाए।

श्री कुमावत ने कहा कि सर्दी के मौसम में संक्रामक रोगों की संभावना अधिक रहती है। अत: संक्रामक रोगों की रोकथाम हेतु एन्डेमिक क्षेत्रानुसार समयबद्ध रूप से आवश्यक टीकाकरण कराया जाए तथा पशुपालकों को इन रोगों से बचाव के उपायों के बारे में जागरूक बनाया जाए। उन्होंने गौशालाओं में संधारित पशुधन का नियमित स्वास्थ्य परीक्षण निकटवर्ती पशु चिकित्सक से कराने के निर्देश देते हुए कहा कि गौशाला प्रबंधन के सहयोग से गौशालाओं में टीकाकरण, डीवार्मिंग तथा उपचार आदि कार्य सुनिश्चित किए जाएं।

पशुपालन मंत्री ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों से शीत ऋतु में बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, नागौर आदि जिलों में ऊंटों में श्वास संबंधी बीमारियों का प्रकोप देखा गया है अत: उष्ट्र संपदा की स्वास्थ्य रक्षा के लिए विशेष ध्यान दिया जाए।

उन्होंने पशु स्वास्थ्य संरक्षण के साथ साथ इस मौसम में पशुओं के आहार और आवास पर भी विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए हैं। पशुओं को ठंडी हवा, वर्षा और नमी से पूरी तरह सुरक्षित रखने के लिए उन्हें सूखे और हवादार स्थानों पर रखा जाए। पशुओं के बिछावन के लिए पर्याप्त मात्रा में सूखा भूसा, गुन्नी बैग या अन्य सूखी सामग्री का उपयोग किया जाए। उन्होंने पॉल्ट्री पक्षियों के लिए शेड के अंदर पर्दे लगाने और आवश्यकतानुसार हीटर के उपयोग पर भी बल दिया। उन्होंने कहा कि शीतलहर के दौरान पशुओं की उर्जा आवश्यकता बढ़ जाती है इसलिए उनके आहार में गुड़, अनाज, खल्ली और उर्जा के अन्य स्त्रोतों की मात्रा बढ़ाई जाए। उन्हें गुनगुना पानी उपलब्ध कराया जाए ताकि वे पर्याप्त जल ग्रहण कर सकें। श्री कुमावत ने पशुपालकों से भी अपील की है कि इस मौसम में अपने पशुओं का खास ख्याल रखें। विभाग द्वारा पशुओं की देखभाल को लेकर समय समय पर निर्देश जारी किए जाते हैं पशुपालक उन निर्देशों का पालन करें। जरूरत पड़ने पर तुरंत अपने नजदीक के पशु चिकित्सालय या उप केंद्र में संपर्क करें।

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

व्यक्तिगत क्लासीफाइड

विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-

- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि
- बीज ▪ औषधीय फसल

विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक

- अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड

विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण
साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.

कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्रायें, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
(सोमवार से शनिवार प्रातः 9 बजे से शाम 7 बजे तक)
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagat
@krishakjagatindia @krishak_jagat

ऊर्जा मंत्री ने की फर्टिलाइजर उपलब्धता की समीक्षा बैठक

एक सप्ताह में यूरिया की पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित की जाएगी : श्री नागर

जयपुर। ऊर्जा मंत्री श्री हीरालाल नागर ने कहा कि दिसंबर माह के पहले सप्ताह में कोटा जिले में यूरिया की पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित की जाएगी ताकि किसानों को समय पर खाद उपलब्ध कराया जा सके। उन्होंने कहा कि सीएफसीएल (चंबल फर्टिलाइजर एंड केमिकल्स लि.) द्वारा अगले सप्ताह 1000 मीट्रिक टन यूरिया की प्रतिदिन आपूर्ति की जाएगी, जिसे ग्राम सेवा सहकारी समिति एवं क्रय विक्रय सहकारी समिति के माध्यम से सीधे किसानों तक पहुंचाया जाएगा। उन्होंने कहा कि यूरिया की कालाबाजारी रोकने के लिए सहकारी समितियों के माध्यम से किसानों को सीधे फर्टिलाइजर की आपूर्ति को प्राथमिकता दी जा रही है।

श्री नागर ने कोटा सर्किट हाउस में जिला कलक्टर, कृषि विभाग, सहकारिता विभाग एवं फर्टिलाइजर आपूर्ति करने वाली कंपनियों के प्रतिनिधियों के साथ जिले में यूरिया की आपूर्ति की समीक्षा की। उन्होंने शिक्षा विभाग एवं पीडब्ल्यूडी के अधिकारियों के साथ सांगोद विधानसभा क्षेत्र में एसडीआरएफ के तहत स्कूलों की मरम्मत कार्य की प्रगति की भी समीक्षा की।

ऊर्जा मंत्री ने बैठक के दौरान ही प्रमुख शासन सचिव कृषि एवं सहकारिता श्रीमती मंजू राजपाल से बात की और उनसे कोटा जिले के लिए फर्टिलाइजर आवंटन बढ़ाने को कहा। उन्होंने कहा कि कोटा जिले की मांग 95 हजार मीट्रिक टन खाद की थी लेकिन 74 हजार मीट्रिक टन ही आवंटित किया गया था। ऐसे में जिले में एक साथ हुई रबी सीजन की बुवाई को देखते हुए यूरिया का आवंटन बढ़ाया जाए।

प्रमुख शासन सचिव, कृषि ने अवगत कराया कि केंद्र सरकार को 50 हजार मीट्रिक टन अतिरिक्त फर्टिलाइजर आवंटन के लिए लिखा गया है। अतिरिक्त आवंटन की स्वीकृति मिलने पर कोटा जिले को भी अतिरिक्त आवंटन किया जाएगा। श्री नागर ने कहा कि कोटा जिले में नवम्बर माह तक 43 हजार मीट्रिक टन फर्टिलाइजर सप्लाई होना था, लेकिन अभी करीब 37 हजार मीट्रिक टन की आपूर्ति ही हुई है, बाकी बचे हुए फर्टिलाइजर की आपूर्ति दिसम्बर के पहले सप्ताह में सुनिश्चित की जाए ताकि जिले में किसानों को जल्दी बुवाई के कारण समय से पहले ही मांग बढ़ने पर उसके अनुरूप यूरिया उपलब्ध कराया जा सके।

उन्होंने सीएफसीएल के अधिकारियों को निर्देश दिए कि सीएफसीएल अगले सप्ताह में 6 हजार मीट्रिक टन यूरिया कोटा जिले को सप्लाई कर यहां हुई कम आपूर्ति की कमी पूरी करे। उन्होंने कृभकों एवं इफको को भी यूरिया की सप्लाई बढ़ाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि फर्टिलाइजर की कालाबाजारी एवं अटैचमेंट साथ देने की प्रवृत्ति पर भी रोक लगाई जाए। उन्होंने फर्टिलाइजर निर्माता कंपनियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि प्राइवेट डीलर्स को देने की बजाय प्राथमिकता से यूरिया सहकारी समितियों को उपलब्ध कराएं ताकि जिले के किसानों तक समय पर खाद पहुंच सके।

बैठक में कृषि विभाग के अधिकारियों ने बताया कि नवंबर माह तक 6 हजार मीट्रिक टन फर्टिलाइजर की कम आपूर्ति हुई है। पहले रबी फसलों की बुवाई दिसंबर के अंत तक होती थी, इस बार बारिश होने से नवंबर माह में ही किसानों ने एक साथ बुवाई कर दी। इसके अलावा इस बार 20 हजार हेक्टेयर अधिक एरिया में रबी फसल की बुवाई संभावित है। इसलिए, एक साथ यूरिया की मांग बढ़ने से मांग के अनुरूप आपूर्ति में समस्या आ रही है।

78 वर्ष
कृषक जगत राष्ट्रीय कृषि अखबार भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
⇨ वार्षिक रु. 600/- ⇨ दो वर्ष रु. 1000/-
⇨ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से **'कृषक जगत'** – प्रति सप्ताह ☐ भोपाल ☐ जयपुर ☐ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).

नाम .....
.....
ग्राम ..... पो. .....
डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : .....
वि.ख. ..... तह. .....
जिला ..... पिन ☐☐☐☐☐☐ राज्य .....
शिक्षा ..... भूमि ..... उम्र .....
ट्रैक्टर/मॉडल ..... फोन/मो. .....
ई-मेल .....
मेरा सदस्यता शुल्क रुपये ..... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/
मनीऑर्डर/क्र. ..... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम
कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php
Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793, Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861
कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
प्रसार प्रबंधक कृषक जगत

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.),मो.: 9826255862
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403,आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें

सेक्स सॉर्टेड सीमन योजना का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार हो : डॉ. शर्मा

जयपुर। शासन सचिव पशुपालन, गोपालन और मत्स्य डॉ. समित शर्मा की अध्यक्षता में सचिवालय स्थित उनके कक्ष में विभागीय अधिकारियों की महत्वपूर्ण समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में विभागीय योजनाओं की प्रगति तथा आगामी कार्य योजना पर विस्तृत चर्चा की गई। शासन सचिव ने विभागीय अधिकारियों से जमीनी स्तर पर चल रही योजनाओं की वास्तविक स्थिति की जानकारी लेते हुए पशुपालकों को समयबद्ध और गुणवत्तापूर्ण सेवाएं उपलब्ध कराने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार पशुपालकों की आय बढ़ाने तथा आधुनिक पशुपालन सेवाएं सुलभ कराने के लिए निरंतर प्रभावी कदम उठा रही है।

शासन सचिव डॉ. शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री के देश को डिजिटल भारत के रूप में विकसित करने की दिशा में पशुपालन विभाग भी तकनीकी रूप से सशक्त और सभी विभागीय सेवाओं को ऑनलाइन तथा सरल बनाने के लिए प्रयासरत है। उन्होंने कहा कि विभाग के सभी कार्मिकों को HRMS (Human Resource Management System) से जोड़ा जाए और उनकी कार्ययोजना तथा प्रगति की निरंतर मॉनिटरिंग की जाए इसके लिए उन्होंने अधिकारियों को विभाग का डिजिटलाइजेशन करने की दिशा में गंभीर प्रयास करने के निर्देश दिए।

सेक्स सॉर्टेड सीमन तकनीक के उपयोग पर चर्चा करते हुए डॉ. समित शर्मा ने कहा कि यह पशुपालन के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कदम है जो पशुपालकों को चार गुना फायदा देगी। डॉ. शर्मा ने सेक्स सॉर्टेड सीमन योजना का प्रदेश में अधिक से अधिक प्रचार प्रसार करने पर जोर दिया जिससे सभी पशुपालकों तक इसकी जानकारी पहुंच सके और वे इस योजना के लाभ से अवगत होकर इसका अधिक से अधिक लाभ उठाएं। उन्होंने कहा कि सेक्स सॉर्टेड सीमन की 10 लाख डोज फरवरी तक प्रदेश को मिल जाएगी इसके वितरण के लिए अभी से कार्ययोजना बना ली जाए जिससे समय पर इसका उपयोग सुनिश्चित हो और पशुपालक इससे लाभ उठा सकें। उन्होंने डोजेज को सुरक्षित रखने के लिए कोल्ड चेन के रखरखाव पर भी ध्यान देने की आवश्यकता जताई। उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में सेक्स सॉर्टेड सीमन से ही एआई करनी है इसके लिए पशुधन निरीक्षक को विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता है जिससे सही तरीके से एआई की जा सके। डॉ शर्मा ने कृत्रिम गर्भाधान का इन्द्राज पशुधन एप पर किए जाने के भी निर्देश प्रदान किए।

डॉ. शर्मा ने निर्देश दिए कि विभाग के व्यय की भी मॉनिटरिंग की जाए और केंद्र और राज्य से मिलने वाले फंड का समुचित और समय पर इस्तेमाल किया जाए। उन्होंने विधान सभा के प्रश्नों को शून्य करने के निर्देश दिए।

बैठक में पशुपालन निदेशक डॉ. आनंद सेजरा ने नेत्र चिकित्सालय, एनिमल प्रोस्थेटिक सेंटर, पेट शॉप रजिस्ट्रेशन की भी जानकारी दी। अब तक प्राप्त 128 आवेदन में से 88 पेट शॉप पंजीकृत हो चुके हैं।

कृषि एवं ग्रामीण विकास विभाग की बैठक का आयोजन

राज्य के विकास कार्यों को मिले गति, बजट घोषणाओं का हो समयबद्ध क्रियान्वयन : मुख्य सचिव

जयपुर। मुख्य सचिव श्री वी. श्रीनिवास ने अधिकारियों को सम्बंधित विभागों की बजट घोषणाओं के समयबद्ध क्रियान्वयन के लिए निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि विभागों द्वारा 'विकसित राजस्थान 2047' में उल्लेखित मध्यावधि एवं दीर्घकालिक कार्ययोजना बनाकर लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित की जाएं।

मुख्य सचिव शासन सचिवालय में ग्रामीण एवं

कृषि विभाग की बैठक ले रहे थे। उन्होंने विभागीय अधिकारियों से उनके विभाग द्वारा संचालित योजनाओं, कार्यक्रमों एवं 'विकसित राजस्थान 2047' के सम्बन्ध में हो रही प्रगति की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि योजनाओं के क्रियान्वयन में पारदर्शिता, प्रभावशीलता और जनहित सर्वोपरि रखा जाए।

श्री वी. श्रीनिवास ने कहा कि सुशासन को मजबूती देने के लिए राज्य सरकार की प्रथमिकता अंतिम लाभार्थी तक सेवा पहुँचाना है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि योजनाओं में आ रही किसी भी बाधा को तुरंत चिन्हित कर समाधान सुनिश्चित करें तथा अंतर-विभागीय समन्वय को मजबूत करें ताकि राज्य के विकास कार्य तेज़, सटीक और लक्ष्य आधारित रूप से आगे बढ़ें।

बैठक में अतिरिक्त मुख्य सचिव ग्रामीण विकास विभाग श्रीमती श्रेया गुहा ने विभागीय योजनाओं एवं कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी दी। उन्होंने राजीविका के माध्यम से प्रदेश की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने वाली विभिन्न गतिविधियों के बारे में बताया।

सहकारिता विभाग की प्रमुख शासन सचिव श्रीमती मंजू राजपाल ने बताया कि विभाग द्वारा प्रदेश में संचालित सहकारी समितियों का डिजिटलीकरण कर त्वरित लेन-देन एवं पारदर्शी ऋण सुविधाओं को सुनिश्चित किया जाएगा। विकसित राजस्थान 2047 के लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में सभी पैक्स के कम्प्यूटरीकरण एवं अन्न भण्डारण क्षमता को बढ़ाने के लिए कोल्ड स्टोरेज का विकास किया जाएगा। कृषि एवं पंचायती राज (कृषि) की आयुक्त सुश्री

चिन्मयी गोपाल ने बताया कि जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए प्रदेश में जलवायु स्मार्ट कृषि की दिशा में प्रयास किये जा रहे हैं। कृषि में तकनीक के उपयोग को बढ़ावा देकर फसल उत्पादन में वृद्धि के साथ ही किसानों को पशुपालन एवं अन्य माध्यम से जोड़कर उनके आय के साधनों में वृद्धि को सुनिश्चित किया जाएगा।

पशुपालन विभाग के शासन सचिव डॉ. समित शर्मा ने बताया कि मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना के अंतर्गत प्रदेश के विभिन्न किसान लाभान्वित किये जा रहे है एवं विभाग द्वारा पशुधन में सेक्स सॉर्टेड कृत्रिम गर्भाधान की सफल प्रक्रिया का संचालन भी किया जा रहा है। मत्स्य ठेका प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने के लिए मत्स्य विभाग द्वारा ई-ऑक्शन पोर्टल शुरू किया गया है।

जैविक खाद के उपयोग से अच्छी क्वालिटी के उत्पाद तैयार करें : श्री चौधरी

किसानों के सुझावों को सरकार तक पहुंचाएगा आयोग

जयपुर। राज्य किसान आयोग के अध्यक्ष श्री सीआर चौधरी ने कोटा में किसानों के साथ संवाद किया। उन्होंने कहा कि राज्य किसान आयोग द्वारा किसानों की पीड़ा सुनने के लिए अलग-अलग जिलों में जाकर उनसे संवाद किया जा रहा है। विभिन्न जिलों में जाकर किसानों की बात सुनी जा रही हैं, उनकी समस्याएं लिखी जा रही हैं और वाजिब मांगों सरकार तक पहुंचाया जा रहा है।

श्री चौधरी ने कहा कि आयोग सरकार और किसान भाईयों के बीच एक सेतु की तरह काम कर रहा है। कोटा जिले में संवाद के दौरान किसानों की ओर से काफी अच्छे सुझाव आए हैं और अपनी मांगे रखी गई हैं। इन्हें आयोग की ओर से राज्य सरकार और केन्द्र सरकार को भेजा जाएगा। उन्होंने कहा कि किसान अपने सुझाव लिखकर भी दें ताकि आयोग के माध्यम से सरकार के पास पहुंचाई जा सके।

उन्होंने किसानों को सुझाव दिया कि वे बेहिसाब उर्वरक एवं पेस्टिसाइड का उपयोग करने की बजाय जैविक खाद जैसे उपायों से अच्छी क्वालिटी का उत्पाद तैयार करें। उन्होंने कहा कि खाद्यान्न में पेस्टिसाइड का छोटा भी अंश मिलने पर विदेशों में एक्सपोर्ट करना संभव नहीं होता है। उन्होंने कहा कि जैविक खाद का उपयोग कर तैयार किए गए उत्पादों की खरीद के लिए सर्टिफाइड दुकानें तय की जाएंगी ताकि जैविक उत्पाद तैयार करने वाले किसानों को अच्छी कीमत मिल सके।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार ने पिछले 10 सालों में किसानों के हित कई कदम उठाए हैं। समर्थन मूल्य बढ़ाना, मिनी स्प्रिंकलर योजना, सॉइल हेल्थ कार्ड जैसी योजनाएं किसानों के लिए लाभकारी साबित हुई हैं। फसल बीमा को लेकर किसानों द्वारा रखी गई समस्याओं पर उन्होंने कहा कि किसान आयोग का प्रयास रहेगा कि किसानों को फसल खराबे का उचित मुआवजा मिले। इसके लिए फसल खराबा सर्वे कार्य को और प्रभावी तरीके से किया जाएगा। संवाद के दौरान किसानों द्वारा महत्वपूर्ण सुझाव दिए गए। सांगोद पंचायत समिति के कनवास निवासी महावीर मेरोठा ने प्रत्येक उपखंड स्तर पर सॉइल टेस्टिंग लेब की सुविधा उपलब्ध कराने, अनुदानित बीज बुआई से पहले उपलब्ध कराने, गौशालाओं में जैविक खाद इकाई स्थापित कर किसानों को कम खर्चे में जैविक खाद उपलब्ध कराने के सुझाव दिए। लाडपुरा तहसील के कसार निवासी कौशल किशोर प्रजापति ने संरक्षित खेती के माध्यम से उत्पादन बढ़ाने एवं आय दुगुनी करने के संबंध में जानकारी दी। ड्रोन दीदी के नाम से मशहूर दुर्गेश कुमारी ने फसलों पर छिड़काव के लिए ड्रोन के उपयोग से जुड़े सुझाव दिए। अधिकतर किसानों ने फसल बीमा योजना के तहत मुआवजे की प्रक्रिया को और आसान एवं किसानों के हित में करने की मांग रखी। इसके अलावा एमएसपी पर खरीद के लिए तुलाई समय पर शुरू करने का भी सुझाव रखा गया।

संवाद के दौरान संयुक्त निदेशक कृषि विस्तार श्री अतीश कुमार शर्मा ने बताया कि कोटा जिला प्राकृतिक रूप से जल संपदा से परिपूर्ण है। यहां विभिन्न विभागों द्वारा टीम वर्क के रूप में कार्य कर किसानों की समस्याओं का प्राथमिकता से समाधान किया जा रहा है। जिले में खाद की पर्याप्त आपूर्ति की दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं। सॉइल टेस्टिंग की रिपोर्ट के आधार पर किसानों को अपने खेतों में लौह तत्व एवं जिंक तत्वों की कमी पूरी करने के लिए फोर्टिफाइड एसएसपी का उपयोग करने की सलाह दी जा रही है। उन्होंने बताया कि नवाचार के तहत अमोनियम सल्फेट का खाद उपयोग करने को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

उन्होंने किसानों को सलाह दी कि वे फसलों के अवशेष जलाकर मित्र कीटों का नष्ट नहीं करें, फर्टिलाइजर का अधिक उपयोग नहीं करते हुए जैविक खेती के माध्यम से उत्पाद तैयार करें।

कार्यक्रम में संयुक्त निदेशक पशुपालन डॉ. गणेश दाधीच ने पशुपालकों के उत्थान के लिए राज्य सरकार द्वारा संचालित योजनाओं की जानकारी दी।

रबी 2025-26 में उर्वरक आपूर्ति की समीक्षा

उर्वरक की कालाबाजारी एवं अवैध भंडारण के मामलों में किए जाएं लाइसेंस रद्द : श्री शर्मा

जयपुर। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रदेश में इस बार अच्छी वर्षा होने से किसानों ने रबी फसलों की अग्रिम बुवाई की है। उन्होंने कहा कि किसानों की उर्वरक की मांग के अनुरूप पर्याप्त मात्रा में उर्वरक उपलब्ध है तथा किसानों को समय पर उर्वरक आपूर्ति में किसी प्रकार की कमी नहीं आने दी जाएगी।

श्री शर्मा मुख्यमंत्री कार्यालय में रबी सीजन - 2025 में उर्वरक के आवंटन, आपूर्ति एवं वर्तमान उपलब्धता की स्थिति की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने सभी जिलों में उर्वरक की पर्याप्त उपलब्धता बनाए रखते हुए आपूर्ति सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

किसानों को उर्वरक की उपलब्धता की दें नियमित जानकारी - श्री शर्मा ने कहा कि कई बार सही जानकारी के अभाव के कारण किसान आवश्यकता से पहले ही अधिक मात्रा में उर्वरक खरीदते हैं। इसलिए सभी जिलों में किसानों को उर्वरक की उपलब्धता की नियमित जानकारी दी जाए तथा विश्वास दिलाया जाए कि उन्हें सरकार समय पर पर्याप्त उर्वरक की आपूर्ति सुनिश्चित करेगी। उन्होंने उर्वरक की आपूर्ति संबंधी समस्या दर्ज कराने के लिए सम्पर्क नम्बर जारी करने के निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि अनुदानित यूरिया के गैर कृषि कार्यों तथा अन्य औद्योगिक गतिविधियों में उपयोग पर पूरी तरह से अंकुश लगाया जाए। उर्वरकों की कालाबाजारी एवं अवैध भंडारण के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए तथा ऐसे मामलों में लिप्त विक्रेताओं के लाइसेंस रद्द किए जाएं।

अंतरराज्यीय सीमावर्ती जिलों में सख्त हो निगरानी - श्री शर्मा ने कहा कि प्रदेश से अन्य राज्यों में उर्वरक के परिगमन को रोकने के लिये सीमावर्ती जिलों में सख्त निगरानी की जाए। साथ ही, प्रदेश में अधिक से अधिक ग्राम सेवा सहकारी समितियों के माध्यम से उर्वरक क्रय एवं वितरण के लिए समितियों का सुदृढ़ीकरण किया जाए।

बैठक में बताया गया कृषि विभाग ने उर्वरक की कालाबाजारी एवं अवैध भण्डारण के खिलाफ सख्त कार्यवाही करते हुए 1 अप्रेल 2025 से अब तक 11634 औचक निरीक्षण किए हैं। इसके अंतर्गत कालाबाजारी के मामलों में 589 कारण बताओ नोटिस, 77 अनुज्ञापत्र निलंबन/निरस्तीकरण तथा 47 एफआईआर दर्ज की गई हैं।

वहीं, अवैध भंडारण के मामलों में 30 कारण बताओ नोटिस, 24 अनुज्ञापत्र निलंबन/निरस्तीकरण एवं 27 एफआईआर दर्ज की गई हैं। इसके साथ ही, अमानक गुणवत्ता एवं उर्वरक डायवर्जन के मामलों में भी कार्रवाई की गई है।

बैठक में मुख्य सचिव श्री वी. श्रीनिवास सहित कृषि, सहकारिता एवं संबंधित विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे।

वर्षा जल संरक्षण के लिए

राज्य सरकार द्वारा 7 हजार 959 डिग्गियों का निर्माण : डॉ. मीणा

जयपुर। राज्य में वर्षा जल संरक्षण एवं उसके दक्षतापूर्ण उपयोग तथा कमाण्ड क्षेत्र में नहरी जल को संग्रहण कर बाराबन्दी के दौरान फसल की आवश्यकतानुसार पानी उपलब्ध कराने के उद्देश्य से फार्म पौण्ड एवं डिग्गी निर्माण योजनाएं संचालित की जा रही हैं।

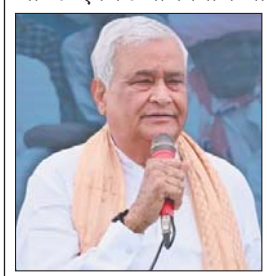

कृषि मंत्री डॉ. किरोड़ी लाल ने बताया कि बजट घोषणा 2025-26 के तहत् राज्य में 9 हजार 300 फार्म पौण्ड का निर्माण करवाया जा चुका है। वर्तमान राज्य सरकार द्वारा जल संरक्षण हेतु 35 हजार 368 फार्म पोंड का निर्माण करवाकर 213 करोड़ रुपये का अनुदान दिया जा चुका है। इसके साथ ही कुओं से खेत तक होने वाले जल के अपव्यय को बचाने के लिए 32 हजार 918 किलोमीटर सिंचाई पाईप लाइन स्थापित करवाकर 78 करोड़ रुपये का अनुदान दिया जा चुका है। उन्होंने बताया कि बजट घोषणा 2025-26 के अनुसार राज्य में 10 हजार डिग्गीयों का निर्माण कराया जाना है। जिनमें से अब तक लगभग 5 हजार 100 डिग्गीयों का निर्माण करवाया जा चुका है। इनके अनुदान हेतु कृषक कल्याण कोष व राज्य योजना मद से 62 करोड़ रूपये जारी किए गए जा चुके है। जिससे कृषकों को भुगतान किया जा रहा है। शेष अनुदान राशि के लिए 100 करोड़ रुपए राशि आवंटित की गई है, जिन्हें जिलों को आवंटित कर कृषकों को शीघ्र ही भुगतान कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि अटल भूजल योजना अन्तर्गत निर्मित डिग्गीयों के भुगतान हेतु जल शक्ति मंत्री, भारत सरकार श्री सी.आर.पाटिल को पत्र द्वारा अनुरोध कर शेष राशि प्राप्त करने के प्रयास किये जा रहे है। जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार से अनुदान राशि रिलीज होते ही कृषकों की बकाया राशि का भुगतान तुरंत करवा दिया जायेगा।

कृषि विस्तार कार्यकर्ताओं के लिए संदर्भ ग्रंथ
वर्ष भर कृषि सेवाओं और उत्पादों के प्रचार हेतु सर्वोत्तम माध्यम
50 वर्षों से निरंतर प्रकाशित
नए आकार, नए कलेवर में
(एग्जीक्यूटिव डायरी)
कृषक जगत डायरी - 2026

बुकिंग प्रारंभ
प्रमुख आकर्षण
• कृषकों के लिए सरकारी योजनाओं की उपयोगी जानकारी।
• प्रमुख फसलों की नई किस्मों के साथ सम्पूर्ण जानकारी।
• कृषि विभाग के महत्वपूर्ण अधिकारियों के नाम, फोन नंबर ।
• कृषकों के लिए सरकारी योजनाओं की उपयोगी जानकारी ।
• कृषि इनपुट से संबंधित नए उत्पादों की जानकारी ।
• बागवानी, पशु चिकित्सा, कृषि यंत्र की संपूर्ण जानकारी ।
• पंचांग, कैलेण्डर, त्यौहारों, लोक मेलों की जानकारी ।
कृषि आदान-यंत्र निर्माताओं, विक्रेताओं, ट्रैक्टर डीलरों की नववर्ष उपहार के लिए पहली पसंद
कृषक जगत के नियमित सदस्यों के लिए उपहार★
अपना उपहार सुनिश्चित पाने के लिये संपर्क करें
★ नियम व शर्तें लागू
विज्ञापन एवं डायरी खरीदी के लिए संपर्क करें
इंदौर : सचिन बोन्द्रिया : 9826021837
इंदौर कार्या. : 9826024864
भोपाल : अजय बोन्द्रिया : 9826255861
नई दिल्ली, जयपुर : निमिष गंगराड़े : 7387422952
रायपुर : प्रेमप्रकाश सुल्लेरे : 9826255862
ई-मेल : info@krishakjagat.org
हेल्पलाईन : 6262166222
विशेष - मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ एवं राजस्थान कृषि पर विशेष जानकारी